बिगुल

दुनिया के मजदूरो एक हो!

मासिक बुलेटिन • अंक 7-8

नवम्बर-दिसम्बर 1996 • दो रुपये • आठ पृष्ठ

अक्टूबर क्रान्ति विशेषांक

डाक-तार कर्मचारियों की सात दिनों की सफल हड़ताल :

कुछ जरूरी सबक

इस जीत को एक नई शुरुआत का मुकाम बनाओ!

एक कठिन लड़ाई का संकटपूर्ण दौर अभी आगे आने वाला है।

विगत 23 अक्टूबर से लेकर 29 अक्टूबर' 96 तक चली डाक-तार विभाग की देशव्यापी सफल हड़ताल की शुरुआत हालांकि बोनस की सीलिंग समाप्त करने की एक सामान्य सी मांग से हुई थी, लेकिन फिर भी यह देशभर के मज़दूर वर्ग के एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्से की लड़ाई थी और इस नाते इसके कुछ महत्वपूर्ण सबक हैं जिनपर गौर करने की जरूरत है।

हड़ताली डाक-तार कर्मचारियों की मांग बेहद जायज थी। रेलवे और गोदी कर्मचारियों को शेष केन्द्रीय कर्मचारियों से अलग करके और उन्हें एकतरफा बोनस सीलिंग समाप्ति का लाभ देकर सरकार ने मजदूरों और कर्मचारियों की एकजुटता को तोड़ने की गरज से और पूंजीवादी चुनावी राजनीति के तकाजों से जो भेदभाव किया था; उसका कोई न्यायसंगत दिखावटी तर्क भी उसके पास नहीं था। उसकी स्थिति काफी कमजोर थी। कर्मचारियों का आक्रोश एकदम स्वतःस्फूर्त ढंग से फूट सा पड़ा और सात दिनों तक के संघर्ष में उन्होंने कोई कमजोरी नहीं दिखाई। धीरे-धीरे दूसरे विभागों के कर्मचारी भी संघर्ष में शामिल होते गये। बाध्य होकर सरकार ने घुटने टेक दिये। वर्ग 'स' और वर्ग 'द' के सभी कर्मियों को बोनस देने की मांग स्वीकार करनी पड़ी।

यद्यपि यह एक छोटी सी और एकदम स्पष्ट सी न्यायसंगत आर्थिक मांग को लेकर हुई हड़ताल थी, पर फिर भी ट्रेड यूनियन आंदोलन के टूटने-बिखरने, उस पर ट्रेड यूनियन नौकरशाहों के हावी होने और उसके गैर राजनीतिककरण के इस कठिन दौर में कर्मचारियों की देशव्यापी एकजुटता से चले इस संघर्ष की सफलता अपना एक विशेष महत्व रखती है।

(पेज 8 पर जारी)

अपने ऐतिहासिक मिशन को याद करो!
संग्रामी एकजुटता बढ़ाओ!
अपनी आर्थिक–राजनीतिक लड़ाई को
क्रान्तिकारी संघर्ष की एक कड़ी बनाओ!!

श्रम की लूट पर टिकी व्यवस्था में 'बचपन बचाया' नहीं जा सकता

'चाइल्ड लेबर ऐक्शन नेटवर्क' (सी.एल.ए.एन.) नामक संस्था की एक रिपोर्ट के अनुसार, नई आर्थिक नीतियों के कारण पूरी दुनिया में अगले एक दशक के भीतर बाल मजदूरों की संख्या में बीस प्रतिशत की वृद्धि होगी और इसके कारण वयस्कों में बेरोजगारी और अधिक बढ़ेगी।

बाल श्रमिक हैं। विश्व के कुल बाल मजदूरों का करीब 40 प्रतिशत सिर्फ दक्षिण एशियाई देशों में हैं। अकेले भारत में 5 से 14 वर्ष की आयु के 4 करोड़ बाल मज़दूर अपना बचपन गला रहे हैं।

सी.एल.ए.एन. के अध्यक्ष जोसेफ गाथिया के अनुसार, कुल मजदूरों में 6

भूमण्डलीकरण की नीतियों के साथ बाल मजदूरों के बर्बर शोषण में भारी वृद्धि

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई.एल.ओ.) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, पूरी दुनिया में 10 से 14 वर्ष के बीच की उम्र के लगभग सात करोड़ तीस लाख बाल मजदूर हैं। पर वास्तविक तस्वीर इससे कहीं अधिक भंयकर है। स्वयं आई.एल.ओ. भी स्वीकार करता है कि दस वर्ष से कम उम्र के बाल श्रमिकों और घरों में नौकरानी के रूप में काम कर रही लड़कियों की सही संख्या के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। सी.एल.ए.एन. के अध्यक्ष का कहना है कि बाल श्रमिकों की कुल संख्या आई.एल.ओ. के आकलन से कहीं बहुत ज्यादा है। अकेले दक्षिण एशिया में 10 करोड़ से अधिक प्रतिशत बाल मजदूर है। अधिकांश बाल मजदूर खेतों में या उससे जुड़े व्यवसायों में काम करते हैं। संस्था के अनुसार, बाल मजदूरी का सबसे बड़ा कारण गरीबी है। कई बार बच्चा इसलिए भी काम करने को मजबूर होता है क्योंकि उसके परिवार में कमाने वाले सदस्य की मृत्यु हो गई है या वह गंभीर बीमारी से ग्रस्त है या फिर उसको लगातार सौ दिन दिहाड़ी नहीं मिल पाती। सी.एल.ए.एन. के अनुसार भारत तथा अन्य विकासशील देशों में बाल मज़दूरी की समस्या गंभीरतम है। यहां मज़दूर वर्ग और बाल श्रम सम्बन्धी नीतियों में कोई तालमेल नहीं

(पेज 3 पर जारी)

अक्टूबर क्रान्ति की 79वी वर्षगांठ (7 नवम्बर) के अवसर पर विशेष सम्पादकीय अग्रलेख

अक्टूबर क्रान्ति की मशाल बुझी नहीं है! बुझ नहीं सकती!

अमर नहीं है पूंजीवाद! उसका संहार होगा नई समाजवादी क्रान्ति के हाथों!!

अब से ठीक 79 वर्ष पहले, 1917 में (पुराने कैलेण्डर के अनुसार अक्टूबर में और नये कैलेण्डर के अनुसार नवम्बर में) मेहनतकश अवाम ने, क्रान्तिकारी मजदूर वर्ग की अगुवाई में, रूस में पहली बार पूंजीपतियों और सभी संपत्तिवान लुटेरों की राज्यसत्ता को बलपूर्वक उखाड़ फेंका था और पहली बार महान लेनिन और उनकी बोल्शेविक कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सर्वहारा राज्यसत्ता की -- **सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व** की स्थापना की थी।

मानव समाज के वर्गों में बंटने के बाद के हजारों वर्षों के इतिहास में **यह पहली ऐसी क्रान्ति थी** जिसमें राज्यसत्ता एक शोषक वर्ग से दूसरे, नये शोषक वर्ग के हाथ में नहीं बल्कि मेहनतकश शोषित-उत्पीड़ित जनता के हाथों में गई थी।

इतिहास की पहली सचेतन संगठित क्रान्ति जिसने पहली बार उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व का नाश कर दिया और समता के साथ तरक्की की रफ्तार का नया रिकार्ड कायम किया

दबे-कुचले लोगों ने पूरे मानव इतिहास में बगावतें तो अनगिनत बार की थीं लेकिन **पेरिस कम्यून** (1871 में पेरिस के मज़दूरों द्वारा सम्पन्न क्रान्ति और पहली सर्वहारा सत्ता की स्थापना, जिसे 72 दिनों बाद फ्रांसीसी पूंजीपतियों ने पूरे यूरोप के प्रतिक्रियावादियों की मदद से कुचल दिया) की शुरुआती कोशिश के बाद, अक्टूबर क्रान्ति मेहनतकश वर्गों की पहली योजनाबद्ध, सचेतन तौर पर संगठित क्रान्ति थी जिसके पीछे एक दर्शन था, एक विचारधारा थी, एक कार्यक्रम था, एक युद्धनीति थी और एक ऐसे रास्ते की रूपरेखा भी थी जिससे होकर आगे बढ़ते हुए एक नये समाज की रचना करनी थी।

निजी सम्पत्ति और वर्ग-शोषण के अस्तित्व में आने के लगभग चार हजार वर्षों बाद पहली बार मेहनतकशों की सोवियत सत्ता ने अबतक असंभव और महज किताबी माने जाने वाली बात को संभव बनाकर वास्तविकता की ज़मीन पर उतार दिया।

(पेज 4 पर जारी)

आपस की बात

- 'बिगुल' सितम्बर '96 का अंक हमने पढ़ा। हमें बहुत ही पसन्द आया। यहां पाठक सभी क्रान्तिकारी विचार के हैं। आप पांच प्रतियां निश्चित तौर पर भेजा करें। सम्पर्क आगे बढ़ाना है।

- का. गणपत लाल
ग्रा.-काजी रसूलपुर, पो.-तेघड़ा
जि.-बेगूसराय-851133

'बिगुल' का अंक - 4 पूरा पढ़ गया। पत्रिका सार्थक सोच और दिशा देने में सक्षम है। आपके विचार पैने लगे। आर्थिक गड्डमड्ड नीति और साम्राज्यवादियों की कुत्सित मानसिकता की धज्जी उड़ाती रपट 'मेहनतकश अवाम के लिए कपट ही कपट' काफी सारगर्भित है। बहन कात्यायनी की रपट स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार की कहानी कहती है। 15 अगस्त पर 'आजादी शान्ति के रास्ते नहीं क्रान्ति के रास्ते मिलती हैं सोचने को मजबूर करती है। अली सरदार जाफरी की कविता 'कौन आजाद हुआ' और ओसानो अकिको की कविता 'सोई हुई औरतें' आगे बढ़ेंगी अच्छी है।

कलाधर, सं. 'कला'
नया टोला, लाइन बाजार
पूर्णिया-854301

पाठक साथियों से.....

बिगुल के हर अंक के साथ इसके पाठकों–साथियों का दायरा बड़ा हो रहा है। इसी के साथ हमारी चुनौतियां और जिम्मेदारियां भी बढ़ती जा रही हैं छपाई, डाक, रेल भाड़ा, किराया आदि के बढ़ते खर्च का भी दबाव लगातार हम पर है।इस बार कई मजबूरियां के चनते हमें बिगुल के दो अंक एक साथ निकालने पड़ रहे हैं। हमें विश्वास है, साथी हमारी मजबूरी समझेंगे।

बिगुल को आपके सहयोग की फौरी जरूरत है। इसे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाएं, ग्राहक बनाएं, इसके लिए चन्दा इकट्ठा करें। अखबार की प्रतियों और सहयोग कूपन के लिए आज ही हमें इस पते पर लिखें :
सम्पादक 'बिगुल'
द्वारा, ओ. पी. सिन्हा
69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज,
लखनऊ - 226 007

भूल सुधार

बिगुल के सितम्बर '96 अंक में 'पूंजीवादी राजनीति का सबसे गन्दा चेहरा...' शीर्षक लेख में **लेनिन** के उद्धरण के कुछ महत्वपूर्ण शब्द छूट जाने से उसका अर्थ ही उलट गया था। इस गम्भीर गलती के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। लेख के उस हिस्से को हम यहां दोबारा प्रकाशित कर रहे हैं। - सम्पादक

लेनिन के शब्दों में, **"पार्लियामेण्ट की सीटें केवल इसलिए और केवल उसी हद तक हमारे लिए महत्वपूर्ण होती हैं जिस हद तक कि आम जनता की राजनीतिक चेतना का विकास करने, उसे उच्चतर राजनीतिक स्तर पर उठाने, तथा उसे संगठित करने में वे सहायक होती हैं। ऐसा हम अधकचरे सुख की प्राप्ति के लिए नहीं, "शान्ति", "व्यवस्था" तथा "शान्तिपूर्ण" (पूंजीवादी) "परमानन्द" की प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि संघर्ष के लिए, श्रम को समस्त शोषण तथा समस्त उत्पीड़न से पूर्ण मुक्ति दिलाने के संघर्ष के लिए करना चाहते हें। केवल इसी उद्देश्य के लिए और केवल उसी हद तक जिस हद तक इस काम में वे मददगार होती हैं, पार्लियामेण्ट की सीटें, तथा सारा का सारा चुनाव आन्दोलन हमारे लिए कोई महत्व रखता है। मजूदरों की पार्टी की समस्त आशाओं का आधार आम जनता हैं : वह जनता जो भयभीत नहीं है, निष्क्रिय रूप से आज्ञाकारी नहीं है, और जो चुपचाप विनीत भाव से जुवे को धारण नहीं किये रहती, बल्कि जो राजनीतिक रूप से सचेत है, अपनी मांगों के लिए खड़ी होने वाली तथा जुझारू है। काले यमदूतों के खतरों का हौआ दिखाकर अधकचरे लोगों को डरवाने के आम उदारपंथी तरीकों को, मज़दूरों की पार्टी को तिरस्कारपूर्वक ठुकरा देना चाहिए। सामाजिक-जनवादियों का सारा काम वास्तविक ख़तरे के सम्बन्ध में, संघर्ष के असली उद्देश्यों के सम्बन्ध में आम जनता को सचेत करना है, उस जनता को सचेत करना है जिसकी असली ताक़त पार्लियामेण्ट में नहीं है, जिसकी पार्लियामेण्ट के अन्दर बहसों में पूरी अभिव्यक्ति नहीं होती, और जो रूस के भविष्य के प्रश्न को पार्लियामेण्ट से बाहर तय करेगी।"** (लेनिन -- सम्पूर्ण ग्रंथावली, खण्ड 11, पृ. 414-18)

बिगुल का स्वरूप, उद्देश्य और ज़िम्मेदारियां

(1) 'बिगुल' व्यापक मेहनतकश आबादी के बीच क्रान्तिकारी राजनीतिक शिक्षक और प्रचारक का काम करेगा। यह मज़दूरों के बीच क्रान्तिकारी वैज्ञानिक विचारधारा का प्रचार करेगा और सच्ची सर्वहारा संस्कृति का प्रचार करेगा। यह दुनिया की क्रान्तियों के इतिहास और शिक्षाओं से, अपने देश के वर्ग संघर्षों और मजदूर आंदोलन के इतिहास और सबक से मज़दूर वर्ग को परिचित करायेगा तथा तमाम पूंजीवादी अफवाहों-कुप्रचारों का भण्डाफोड़ करेगा।

(2) 'बिगुल' देश और दुनिया की राजनीतिक घटनाओं और आर्थिक स्थितियों के सही विश्लेषण से मजदूर वर्ग को शिक्षित करने का काम करेगा।

(3) 'बिगुल' भारतीय क्रान्ति के स्वरूप, रास्ते और समस्याओं के बारे में क्रान्तिकारी कम्युनिस्टों के बीच जारी बहसों को यह नियमित रूप से छापेगा और स्वयं ऐसी बहसें लगातार चलायेगा ताकि मज़दूरों की राजनीतिक शिक्षा हो तथा वे सही लाइन की सोच-समझ से लैस होकर क्रान्तिकारी पार्टी के बनने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें और व्यवहार सही लाइन के सत्यापन का आधार तैयार हो।

(4) 'बिगुल' मजदूर वर्ग के बीच लगातार राजनीतिक प्रचार और शिक्षा की कार्रवाई चलाते हुए सर्वहारा क्रान्ति के ऐतिहासिक मिशन से उसे परिचित करायेगा, उसे आर्थिक संघर्षों के साथ ही राजनीतिक अधिकारों के लिए भी लड़ना सिखायेगा, दुअन्नी-चवन्नीवादी भूजाछोर "कम्युनिस्टों" और पूंजीवादी पार्टियों के दुमछल्ले या व्यक्तिवादी-अराजकतावादी ट्रेडयूनियनबाजों से आगाह करते हुए उसे हर तरह के अर्थवाद और सुधारवाद से लड़ना सिखायेगा तथा उसे सच्ची क्रान्तिकारी चेतना से लैस करेगा। यह सर्वहारा हो कतारों से क्रान्तिकारी भरती के काम में सहयोगी बनेगा।

(5) 'बिगुल' मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी शिक्षक, प्रचारक और आहानकर्ता के अतिरिक्त क्रान्तिकारी संगठनकर्ता और आन्दोलनकर्ता की भी भूमिका निभायेगा।

बोल्शेविकों ने सत्ता पर कब्जा कैसे किया

(पेज 8 से आगे)

फरवरी के बाद के महीनों में बोल्शेविकों ने करेन्स्की सरकार को बेनकाब करने का कोई मौका नही गंवाया। बोल्शेविक सड़कों पर जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़े। लोग अब अपने अनुभवों से सीखने लगे थे कि केवल एक दूसरी क्रान्ति ही उनकी समस्याओं का समाधान कर सकती है।

जून के उत्तरार्ध में करेन्स्की ने एक नये सैन्य हमले की घोषणा की। लेकिन जुलाई खत्म होते-होते करेन्स्की की यह नीति विध्वंसकारी नतीजा लेकर सामने आयी और दसियों हजार सिपाहियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। आक्रोश से भरे पेत्रोग्राद के क्रान्तिकारी मजदूर सड़कों पर हथियारबंद प्रदर्शनों के लिए निकल आये जिसमें बागी आम सिपाही भी आकर शामिल हो गये। ये सर्वहारा और सिपाही प्रतिक्रियावादियों के हमलों से भड़क उठे और उन्होंने जमकर मुकाबला किया। जनता के दो तबकों के बीच सशस्त्र मुठभेड़ें हुई और इन लड़ाइयों में सैकड़ों लोग मारे गये।

सड़कों पर हुई इन सशस्त्र मुठभेड़ों के बावजूद बोल्शेविक यह नहीं सोचते थे कि इस मुकाम पर जनता सत्ता पर कब्जा करने का कोई गम्भीर प्रयास करेगी। जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होकर बोल्शेविकों ने वस्तुतः उन्हें कमोबेश सुव्यवस्थित ढंग से पीछे हटने के लिए संगठित किया। हालांकि, पेत्रोग्राद की सड़कों पर जो कुछ हुआ था, उसे देखकर सरकार सकते में आ गयी थी और वह उन्मत्त होकर जनता पर टूट पड़ी। उसने लेनिन की गिरफ्तारी के लिए वारण्ट जारी किया, उन्हें भूमिगत होने के लिए बाध्य किया, और सर्वहाराओं को बर्बरतापूर्वक कुचल डालने के लिए प्रतिक्रियावादियों का खुला आह्वान किया। लेकिन बोल्शेविकों ने दमन-चक्र का मुकाबला किया और अन्ततोगत्वा इन सारी चीजों ने सर्वहारा को और अधिक कड़ियल बना दिया। जनता के एक तबके के बीच यह सोच मजबूत होती गयी कि अस्थायी सरकार शान्तिपूर्ण तरीकों से नहीं झुकेगी और एक दूसरी क्रान्ति आवश्यक है। अगस्त के अन्त तक बोल्शेविकों की स्थिति पुनः मजबूत होने लगी और उनके सदस्यों तथा सर्वहारा के बीच उनके समर्थकों की तादाद में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई इसी समय, सत्ता को सुदृढ़ करने और सर्वहारा को एक झटके के साथ और हमेशा के लिए कुचल डालने में करेन्स्की की नाकामी से रूसी शासक वर्ग का एक धड़ा अपना धीरज खो बैठा। वे तख्तापलट के जरिये अस्थायी सरकार को उखाड़ फेंकने और प्रत्यक्ष सैनिक शासन स्थापित करने की नीयत से रूसी सेना के एक जनरल कार्निलोव की शरण में पहुंचे। अगस्त के आखिरी दिनों में कार्निलोवपंथियों ने पेत्रोग्राद में मार्च शुरू कर दिया। कार्निलोव के मार्च से दहशत खाकर और अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत अस्थायी सरकार बोल्शेविकों पर से प्रतिबंध उठाने को राजी हो गयी। बोल्शेविकों ने इससे यह नतीजा निकाला कि कार्निलोव के तख्तापलट का मतलब न केवल (प्रतिक्रियावादी) अस्थायी सरकार का सत्ता से बेदखल होना होगा बल्कि इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह कि इसका मतलब क्रान्ति और जनता का पूर्ण दमन होगा। उन्होंने कार्निलोव के हमलों से शहर की सुरक्षा का जिम्मा अपने हाथों में लेने के लिए सर्वहारा को संगठित करने का निर्णय लिया। सर्वहाराओं ने क्रान्तिकारी सोच वाले सिपाहियों के साथ मिलकर पेत्रोग्राद के चारों ओर खाइयां खोद डालीं और किलेबंदी की निर्माण किया। अनुभवी सिपाहियों ने युद्ध की तैयारियों के लिए मजदूरों का अभ्यास कराया और हथियारों के इस्तेमाल की ट्रेनिंग दी। कार्निलोव की टुकड़ियों में प्रचार के लिए प्रचारकों को भेजा गया।

शहर के अन्दर सशस्त्र प्रतिरोध को देखते हुए शासक वर्ग के अन्दर कार्निलोव का समर्थन तेजी से खिसकता चला गया और उसकी अपनी कतारों के अन्दर विभाजन और विरोध के फलस्वरूप उसे निर्णायक तौर पर पराजित होना पड़ा तथा उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

कार्निलोव की पराजय ने क्रान्ति के हिंसक दमन के गम्भीर खतरे के प्रति लोगों को सचेत कर दिया। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह कि सर्वहाराओं ने सैन्य संघर्ष और संगठन सम्बन्धी जीवन्त अनुभव हासिल किये। अब क्रान्तिकारी सैन्य संघर्ष रोजमर्रा की जिन्दगी का हिस्सा बन गया था। लोग अस्थायी सरकार के ढुलमुल रवैये से अधिकाधिक ऊबने लगे थे और वे निर्णायक शक्ति परीक्षण चाहते थे। यह भावना बलवती होती जा रही थी कि केवल एक क्रान्तिकारी शासन -- अस्थायी सरकार को हटाकर कायम एक विशुद्ध सोवियत सरकार ही युद्ध और भूख की तबाही से निपट सकती है।

इन सभी और अन्य अनेकानेक कारकों के मद्देनजर लेनिन ने सितम्बर की शुरुआत में यह निष्कर्ष निकाला कि बोल्शेविकों के लिए आम बगावत शुरू कर देने की परिस्थितियां परिपक्व हो चुकी हैं। भण्डाफोड़ों, जनप्रदर्शनों और यहां तक कि प्रतिक्रियावादियों के साथ सशस्त्र झड़पों का दौर खत्म हो रहा था। जनता को जीतने और राजनीतिक ताकत इकट्ठा करने की मंजिल समाप्त हो चुकी थी। अब पार्टी को फौरन सत्ता पर सशस्त्र कब्जे की तैयारियों में जुट जाना था।

(अगले अंक में जारी)

बिगुल यहां से प्राप्त करें

- शहीद पुस्तकालय, द्वारा डा० दूधनाथ, जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, मऊ
- जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर
- विश्वनाथ मिश्र, चेतना कार्यालय, बड़हलगंज, गोरखपुर–273402
- ओमप्रकाश, बाबा का पुरवा (पुराना), पेपर मिल रोड, निशातगंज, लखनऊ
- जनचेतना स्टाल, काफी हाउस के पास, हजरतगंज, लखनऊ, (शाम 5 से 7)
- सत्यम वर्मा, यूनीवार्ता, काज़मी चैम्बर्स, 5 पार्क रोड, लखनऊ
- राहुल फाउण्डेशन, 3/274, विश्वास खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ
- अरविन्द सिंह, 123, बिडला छात्रावास, बी०एच०यू० वाराणसी
- डा. डी०क०. सचान, (शस्य वैज्ञानिक), A–308 आवास विकास (गंगापुर), रामपुर–244901
- प्रो. प्यारे लाल, 139, फूलबाग कालोनी, पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263145
- राजेन्द्र प्रसाद, रेनु मेडिकल की गली, मुख्य सड़क, रेणुकूट, सोनभद्र
- अमृतलाल पाण्डेय, निकट प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, बसखारी, जिला – अम्बेडकरनगर
- एतकाद अहमद, डिपार्टमेंट ऑफ फाउण्डेशन आफ एजुकेशन, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- संतोष शर्मा, Q-No -L/ 61K, बरौनी रेलवे कालोनी, बरौनी, बेगूसराय
- चन्द्रकेतु नरायण शर्मा, एडवोकेट , सांचीपट्टी, बागगली गाछी, स्थान–पो–हाजीपुर, जि–वैशाली
- दीपशिखा पत्रिका मंडप, द्वारा श्री शिवदास पाण्डेय, पानी टंकी चौकी, क्लब रोड, मुजफ्फरपुर
- मैत्रेयी साहित्य संगम, सर्वे आफिस के सामने, लालबाग के.डी.एस. दरभंगा–846004
- अविनाश कुमार सिन्हा/रणजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा शैलेन्द्र श्रीवास्तव, बरियारी चक, मेंहसी, पूर्वी चम्पारण
- विजय कुमार आर्य, कार्यालय, मजदूर संगठन समिति, गुरारू चीनी मिल, गुरारू, गया
- का. गणपत लाल, ग्रा. काजीपुर, पो. तेघड़ा, जि. बेगूसराय–851133
- प्रमोद कुमार, द्वारा रामनरेश पाल, आदर्श नगर, गली नं. 6 मकान नं. 2272, समराला चौक, लुधियाना
- संजय श्रीवास्तव, राजस्थान पत्रिका प्रेस, सुन्दरवास, उदयपुर–313001
- डा.हरियश राय, ए–205 सुजल अपार्टमेंट, सेटेलाइट रोड, रामदेव नगर, अहमदाबाद–380054
- जनार्दन थापा, लुकसान बाज़ार , पो.कैरन जि. जलपाईगुड़ी–735205
- पुस्तक–पत्रिका बिक्री–वितरण केन्द्र डिल्ली बाजार चढ़ाव के पास (निकट पद्म कन्या स्कूल), काठमांडू
- विशाल पुस्तक पसल, अस्पताल लाईन, बुटवल, लुम्बिनी, नेपाल
- जलजला पुस्तक सदन, धमवोजी चौक, नेपालगंज बांके, नेपाल

श्रम की लूट पर टिकी व्यवस्था में 'बचपन बचाया' नहीं जा सकता

है। मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की नीतिगत घोषणाओं के बावजूद उन पर अमल नहीं होता। इसी तरह भारत बाल अधिकारों संबंधी घोषणापत्रों पर हस्ताक्षर करने में तो आगे रहता है, पर क्रियान्वयन के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाता।

आई.एल.ओ. की रिपोर्ट के अनुसार, भारत, पाकिस्तान और बांगला देश सहित दक्षिण एशियाई देशों में 10 से 14 वर्ष के बीच की उम्र के बाल मज़दूरों की संख्या का प्रतिशत सबसे ज्यादा है। बांगला देश में इस उम्र के बच्चों में 31.4 प्रतिशत मज़दूर हैं जबकि पाकिस्तान में ऐसे बच्चों की संख्या करीब 20 प्रतिशत तथा भारत में 15 प्रतिशत है। विश्व भर के कुल बाल मजदूरों में से करीब 44.6 प्रतिशत अकेले एशिया में हैं। अफ्रीका में 10 से 14 वर्ष की उम्र के करीब दो करोड़ 36 लाख मजदूर हैं। यह संख्या विश्व के इस आयु वर्ग के बाल मजदूरों के 26.3 प्रतिशत के बराबर है। रिपोर्ट के अनुसार, अ ीका और लातिन अमेरिका में बाल मजदूरों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

आई.एल.ओ. के ही एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत, घाना, इंडोनेशिया और सेनेगल जैसे देशों के बाल मजदूरों की हालत यह है कि उन्हें महज कुछ पैसों के लिए हर सप्ताह छः-सात दिन काम के सामान्य घण्टों से भी अधिक औसतन रोजाना करीब नौ घण्टें खटना पड़ता है और मजदूरी की रकम परिवार के भरण-पोषण के लिए अपने मां-बाप को दे देना पड़ता है। विश्व में कम से कम दस करोड़ बच्चे खदानों में, कालीन और माचिस उद्योग आदि में गुलामों की जिन्दगी बसर करते हैं। करोड़ों दूसरे बच्चे बूट पालिश, घरेलू नौकर और कूड़े बीनने का काम करते हैं या ढाबों-होटलों में बारह से लेकर सोलह घण्टे तक काम करते हैं। लड़के-लड़कियों -- दोनों में ही बाल वेश्याओं की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

उक्त सर्वेक्षण के अनुसार, लड़कियां लड़कों से अधिक काम करती हैं और कई बार तो उनके काम के पैसे तक नहीं मिलते। शहरी बच्चों की तुलना में ग्रामीण बच्चे ज्यादा काम करते हैं। खेती-बाड़ी के काम में हाथ बंटाने का काम उन्हें अधिक करना पड़ता है।

घाना में एक सर्वेक्षण के अनुसार, 16 प्रतिशत बच्चों ने बिना तनख्वाह के काम किया है। 80 प्रतिशत से अधिक मजदूरी करने वाले लड़के 10 से 14 वर्ष के आयु-वर्ग के हैं जबकि ऐसी लड़कियां 75 प्रतिशत से कुछ अधिक है। सेनेगल में 40 प्रतिशत बच्चे मजदूरी करते हैं। 90 प्रतिशत से अधिक लड़कियां घरेलू नौकरानी के रूप में या खेती में काम करती हैं। 75 प्रतिशत लड़के खेती के काम में लगे हैं। 80 प्रतिशत बच्चों को काम के एवज में पैसे भी नहीं मिलते। दो जून पेट भरने लायक कुछ भी मिल जाना ही उनके लिए न्यामत होता है।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट में यह भी स्वीकार किया गया है कि तीसरी दुनिया के पिछड़े और गरीब देशों में प्राथमिक शिक्षा भरती में 3.1 प्रतिशत की गिरावट आई है। भारत और चीन में प्राथमिक विद्यालयों में भरती की दर 5.2 प्रतिशत से घटकर 2.7 प्रतिशत रह गई है।

कम्प्यूटर, संचार क्रांति, सूचना क्रांति, जेनेटिक इंजीनियरिंग और नये-नये ग्रहों के बारे में जानकारियां जुटाने तथा सुख-सुविधा के एक से एक आधुनिक सरंजाम तैयार करने के जिस युग में खुली बाजार व्यवस्था को पूरी दुनिया में स्थापित करके विकास की नई-नई ऊंचाइयां छूने के दावे किये जा रहे हैं, उसी युग में बच्चों को नर्क के अंधेरे रसातल में गुलामों की जिन्दगी बसर करने के लिए कौन बाध्य कर रहा है?

बाल मजदूरी की समस्या कोई नई परिघटना नहीं है जो आज के दौर में पैदा हुई हो। पूंजीवादी वैभव का पूरा अंबार बच्चे और स्त्रियों के खून और पसीने से सराबोर है। उसका एक बड़ा हिस्सा उनके सस्ते श्रम को निचोड़कर तैयार किया गया है। यह पूंजीवाद का एक "खुला रहस्य" है, एक "जगजाहिर गुप्त बात" है जिसपर वे "मानवतावादी" मसीहा -- स्वयंसेवी संस्थाएं और अन्तरराष्ट्रीय संगठन भी पर्दा डालने की लगातार, हर चंद कोशिशें करते रहते हैं, जो आज बाल मजदूरी को लेकर सबसे अधिक चीख-पुकार मचा रहे हैं, छाती पीट रहे हैं और विलाप कर रहे हैं। वे ऐसा क्यों कर रहे हैं, इसकी चर्चा हम आगे करेंगे। पहले पूंजीवाद के इस "खुले रहस्य" की चर्चा!

'सस्ता से सस्ता खरीदना और मंहगा से मंहगा बेचना' -- यह पूंजीवाद का मूल मंत्र है। कच्चा माल और मानव-श्रम पूंजीपति सस्ता से सस्ता खरीदता है और अपना माल बाजार में मंहगा से मंहगा बेचता है तथा इस प्रक्रिया में मजदूरों के श्रम का बड़ा से बड़ा हिस्सा निचोड़कर पूंजी का अम्बार खड़ा करता है। कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा उत्पादन करके मजदूर के ज्यादा से ज्यादा अतिरिक्त श्रम को निचोड़ने के लिए वह उन्नत से उन्नत मशीनों का इस्तेमाल करता है, जिनपर काम करने वाला मजदूर बहुत कम समय में ही अपने भरण-पोषण के लिए मिलने वाली पगार के बराबर मूल्य का उत्पादन कर लेता है और बाकी समय में वह जो उत्पादन करता है, उसकी बिक्री से मिलने वाली रकम अतिरिक्त मूल्य पैदा करती है। इस तरह मुनाफा बढ़ाने के लिए पूंजीपति उन्नत और आधुनिक मशीनें लाता है, जिसपर मजदूरों की एक छोटी तादाद ही बहुत अधिक उत्पादन कर लेती है। मजदूरों की शेष आबादी काम से बाहर कर दी जाती है। 'औद्योगिक बेरोजगारों की इस रिजर्व सेना' की बढ़ती आबादी मजदूरों की मोल-तोल की क्षमता कम करती जाती है और नतीजतन मजदूरी की दर नीचे हो जाती है।

बड़े पैमाने पर बेरोजगार और छंटनीशुदा मेहनतकश अपना श्रम सस्ती से सस्ती दरों पर बेचने के लिए मजबूर हो जाते हैं। उन्हें जब कोई काम नहीं मिलता तो मजबूर होकर वे अपनी स्त्रियों और बच्चों को भी किसी तरह के काम की तलाश में भेजते हैं जिनका श्रम ठेकेदारों, कारखानेदारो, व्यापारियों और तरह-तरह के घरेलू कामों के लिए अमीर लोगों को मिट्टी के मोल हासिल हो जाता हैं बड़े उद्योंगों में संगठित मजदूरों को जो सुविधाएं देने और जिन सेवा शर्तों को मानने के लिए पूंजीपतियों को बाध्य होना पड़ता है, उन सुविधाओं और उन सेवा शर्तों के बिना ही छोटे-छोटे वर्कशापों में, असंगठित क्षेत्र में मजदूरों, खासकर स्त्रियों और बच्चों के सस्ते श्रम को निचोड़ने का काम सम्पन्न हो जाता है।

आज़ स्थिति यह है कि मजदूरों के संगठित दबाव से बचने के लिए और उनके श्रम को अत्यंत सस्ती दरों पर खरीदने के लिए बड़ी-बड़ी देशी-विदेशी कम्पनियां भी कम्प्यूटर चिप्स और इलेक्ट्रॉनिक सामानों जैसे अत्याधुनिक चीजों के उत्पादन की प्रक्रिया को भी कई हिस्सों में तोड़कर छोटी-छोटी कुटीर उद्योग या घरेलू उद्योगनुमा इकाइयों में बिखरा दे रही है जहां ज्यादा काम ठेके पर कराया जाता है और जिनमें स्त्रियां और बच्चे बेहद कम मजदूरी पर दस-दस, बारह-बारह घण्टे काम करते हैं।

बड़ी संख्या में बेरोजगार मजदूरों और अपनी जगह जमीन से उजड़कर सर्वहारा की कतारों में शामिल होते जा रहे गरीब व मध्यम किसानों के परिवार जब अपने बच्चों का पेट नहीं पाल पाते, तो बूट पालिश करने, कूड़ा बीनने तथा वर्कशापों और ढाबों-चायखानों-होटलों में काम करने के लिए अपने बच्चों को भेजने के अलावा उनके पास कोई रास्ता नहीं रहता क्योंकि दूसरा रास्ता उनके पास सिर्फ भुखमरी का ही होता है। इस स्थिति का भी लाभ पूंजीपति एक और ढंग से उठाते हैं। वे वयस्क मजदूरों को तो काम नहीं देते, पर स्त्रियों ओर बच्चों को काम दे देते हैं, क्योंकि उनसे बहुत कम पैसे देकर अधिक काम लिया जा सकता है।

स्वयंसेवी संस्थाएं, अंतरराष्ट्रीय संगठन और स्वामी अग्निवेश के 'बचपन बचाओ आंदोलन' जैसे मुहिम के कर्ताधर्ता प्रायः जब बाल मजदूरी के खिलाफ आवाज उठाते हैं तो वे गरीबो को ही यह उपदेश पिलाते हैं कि वे अपने बच्चों का बचपन उन्हें काम पर भेजकर तबाह करने की जगह उन्हें पाठशालाओं में पढ़ने के लिए भेजें। दूरदर्शन पर सरकार भी यही प्रचार दिखाती है कि बच्चों के हाथ में काम के औजार नहीं खिलौने और किताबें होनी चाहिए। 'चाइल्ड लेबर ऐक्शन नेटवर्क' जैसी स्वयंसेवी संस्थाएं और यूनीसेफ एवं यूनेस्को जैसी संयुक्त राष्ट्रसंघ की एजेंसियां भी गरीब अभिभावकों को ही झाड़ पिलाती नजर आती हैं कि वे शिक्षा का महत्व नही समझ पाने के कारण अपने बच्चों को काम पर लगा देते हैं। इन संस्थाओं की रिपोर्टो में इस तथ्य का उल्लेख रहता है कि ऐसे मां-बाप खुद काम नहीं करते और अपने बच्चों की कमाई से परिवार का खर्च चलाते हैं।

इन सारी नसीहतों का निचोड़ यह होता है बाल-मजदूरी के अभिशाप की जिम्मेदारी गरीब मां-बापों के स्वार्थ, अमानवीयता और पिछड़ेपन की है। पूरे समाज की पूंजीवादी संरचना को कहीं भी कठघरे में नहीं खड़ा किया जाता और एक हजार एक समाधानों के पुलिन्दों से समस्या को और समस्या के शिकार लोगों को ढंक दिया जाता है। इससे ज्यादा घृणास्पद और गरीब मेहनतकशों के लिए अपमानजनक बात कुछ और हो ही नहीं सकती।

एक गरीब मां-बाप अपने बच्चे से मजदूरी इसलिए नहीं करवाते कि वे उन्हे प्यार नहीं करते या कि वे कामचोर होते हैं। वे उन्हें इसलिए गुलामी के उस भयंकर नर्क में भेजते हैं कि वे खुद उनका पेट नहीं भर सकते और भूख की जलती आग में झुलसकर मरने देने के बजाय वे अपने बच्चों के जिन्दा रहने के अकेले विकल्प को चुनना पसंद करते हैं। बहुसंख्यक गरीब मां-बाप यदि खुद काम नहीं करते और अपने बच्चों की कमाई खाते हैं तो यह उनकी विवशता है न कि स्वार्थ या शौक। यदि कुछ एक गरीब मां-बाप ऐसे हैं भी, तो भी इसके दोषी वे खुद नहीं, यह सामाजिक व्यवस्था है जिसने अनाशा की अंधेरी खाइयों में धकेलकर उनका इस कदर अमानवीकरण कर डाला है। धीसू माधो और आह क्यू जैसे चरित्र इसी व्यवस्था की देन होते हैं।

स्वामी अग्निवेश और कैलाश सत्यार्थी जैसे "बचपन बचाने" वालो से हमारा यह सवाल है कि उनके अभियानों से क्या इस देश के कराड़ों मजदूर और बंधुआ बच्चों की जिन्दगी मुक्त हो सकती है? यदि सभी मजदूर बच्चों को ऐसे अभियानों के द्वारा एकबारगी मुक्ति मिल भी जाये तो खुली बाजार अर्थव्यवस्था और आर्थिक नवउपनिवेशवादी नीतियां क्या उनकी जगह भरने के लिए बेघर-बेबस लोगों के उतने ही बच्चों को नहीं ला खड़ा करेंगी? क्या महज कुछ कारखानों-खदानों से बाल मजदूरों को मुक्त कराते रहने से बाल मजदूरी के काले कलंक से मानवता मुक्त हो सकेगी? क्या इन नये मसीहाओं ने सोचा है कि लाखों बाल मजदूर भी यदि मुक्त हो जायें तो वे क्या खाएंगे, क्या पहनेंगे और किस विद्यालय में पढ़ेगे? देर-सबेर वे उसी दुश्चक्र में जा फंसेंगे, क्योंकि तमाम स्वयंसेवी संस्थाओं के खैरात से उन सबकी परवरिश नहीं संभव होगी और उनके मां-बाप की यदि इतनी कूव्वत होती तो वे बाल मजदूरी करने को बाध्य ही नहीं होते। आखिर ये तमाम 'सान्ता क्लाज' बच्चों को बंधुआ बनाने वाली असली ताकतों की तरफ उंगली क्यों नहीं उठाते? बाल मजदूरों की मुक्ति के लिए प्रचार अभियान चलाने और यहां-वहां से कुछ दर्जन-बच्चों को मुक्त कराकर अखबारी शेशा उछालने के अतिरिक्त अपनी ताकत का एक छोटा सा हिस्सा भी ये लोग साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के विरूद्ध जनता को संगठित करने पर क्यों नहीं खर्च करते?

सोचने की बात यह भी है कि पिछले कुछ वर्षों से अचानक बालश्रमिकों के अमानवीय शोषण के प्रति पश्चिमी साम्राज्यवादी देश और मुख्यतः उन्हीं के इशारों पर चलने वाली अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां इतनी चिन्तित क्यों हो उठी हैं? जो अमेरिका इराक में बमबारी और फिर आर्थिक प्रतिबंधों के द्वारा लाखों बच्चों की हत्या का जिम्मेदार है; जो साम्राज्यवादी देश बोस्निया में, रवाण्डा और लाइबेरिया में, लेबनान में और दुनिया के कई क्षेत्रों में युद्धों और गृहयुद्धों की आग में लाखों बच्चों को हर वर्ष बलि चढ़ाते हैं और लाखों को अनाथ-अपंग बेसहारा बनाते रहे हैं, वे ही अचानक तीसरी दुनिया के तमाम देशों के बाल मजदूरों की समस्या को लेकर इतने बेचैन क्यों हो उठे हैं कि इन देशों की उन तमाम वस्तुओं की अपने देश में बिक्री पर प्रतिबंध लगाने लगे हैं जिनके उत्पादन में बाल श्रम लगा हो? क्या इन रक्त पिपासु लुटेरों और युद्ध पिपासु शैतानों के भीतर अचानक प्रभु यीशू की आत्मा प्रविष्ट हो गई है जो ये तीसरी दुनिया के देशो में तरह-तरह की 'फण्डिंग एजेंसियों' और अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं के द्वारा स्वंयसेवी संगठनों को बाल श्रम विरोधी अभियान चलाने के लिए करोड़ों डालर की खैरात रेवड़ी के मानिन्द बांटने लगे है। पूरे मामले की पेंच यह है कि तीसरी दुनिया के देशों के पूंजीपति वर्ग के साथ मुनाफे के बंटवारे में बड़ा हिस्सा लेने की मोल-तोल में बाल-श्रम के मुद्दे को साम्राज्यवादी एक हथकण्डे के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं।

(पेज 6 पर जारी)

फिरोजाबाद के कांच व चूड़ी कारखाने में जानलेवा स्थितियों में खटते हैं 80 हज़ार बच्चे

दक्षिण एशियाई बाल दासता विरोधी संगठन के बचपन बचाओ आंदोलन के एक सर्वेक्षण के अनुसार उत्तर प्रदेश के उद्योग विभाग और श्रम विभाग के अफसरों और फिरोजाबाद के कांच व चूड़ी कारखानेदारों की मिलीभगत से वहां के 80 हज़ार बाल मज़दूर जान लेवा परिस्थितियों में काम करने के लिए बाध्य हैं।

फिरोज़ाबाद जिले के शहरी एवं देहाती इलाकों में 800 चूड़ी एवं कांच के कारखाने निबंधित हैं जिनमें से 300 इस समय काम कर रहे हैं। इन कारखानों में क़रीब तीन लाख मज़दूर काम करते हैं। बहुसंख्यक मज़दूर उन भट्ठियों पर काम करते हैं जहां का तापमान 1400 से 1800 डिग्री सेंटीग्रेड होता है। इसके अलावा ढाई लाख मज़दूर चूड़ी जुड़ाई का काम करते हैं। यह काम 30 हज़ार परिवारों में घर के अन्दर होता है जिसमें 35 हज़ार महिलाएं और 40 हज़ार बच्चे काम करते हैं। यह काम मिट्टी तेल के लैंपों से होता है। जुड़ाई करते समय निकलने वाला विषैली गैस मिश्रित धुंआ बच्चों के फेंफड़ो में जाता है जिससे उन्हें टी.बी. और सांस के रोग हो जाते हैं।

इनके अलावा 40 हजार बच्चे चूड़ी व कांच कारखानों में दूसरी तरह के वैसे कामों में लगे हैं जो बच्चों के लिए कानूनन वर्जित हैं। इन बाल मज़दूरों की आयु 10 से 12 साल है और इनमें से अधिकांश दलित परिवारों के हैं। इन बच्चों से 10 से 12 घण्टे काम कराया जाता है। सैकड़ों परिवारों में बच्चों को कांच के कारखानों में भेजने और उनसे चूड़ी जुड़ाई का काम लेने की परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है। इन 80 हज़ार बाल मज़दूरों में से 95 प्रतिशत टी.बी. और सांस की बीमारियों से ग्रस्त हैं। जिला प्रशासन और श्रम विभाग के अफसर सब कुछ जानते हुए भी कुछ नहीं करते। उल्टे जब भी केन्द्र या राज्य सरकार के छापे पड़ते हैं तो जिला प्रशासन के लोग कारखानेदारों को पहले से अगाह कर देते हैं।

केन्द्र सरकार ने इन बाल मज़दूरों के लिए जो स्कूल खोले हैं उनमें कुल 1500 बच्चे पढ़ते हैं जिनमें से 75 प्रतिशत चूड़ी या कांच के कारखाने में कभी काम करने नहीं गये। सामान्य नागरिकों ने वजीफा पाने की गरज से अपने बच्चों को इन स्कूलों में भरती करा दिया है।

अलीगढ़ के ताला और मुरादाबाद के पीतल उद्योग में 75,000 बाल मज़दूर

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कराये गये एक अध्ययन के अनुसार अलीगढ़ के ताला उद्योग में करीब 15 हज़ार बच्चे और मुरादाबाद के पीतल उद्योग में क़रीब 60 हज़ार बच्चे काम करते हैं।

अध्ययन के अनुसार, इन बाल मज़दूरों की संख्या बढ़ने के साथ ही इनका शोषण भी लगातार बढ़ता जा रहा है और इनके पेशागत स्वास्थ्य की समस्या भी ज्यादा से ज्यादा गंभीर होती जा रही है। अलीगढ़ के ताला उद्योग में काम करने वाले 57 प्रतिशत बाल श्रमिकों का स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

अलीगढ़ के बाल मज़दूरों में 87 प्रतिशत लड़के और 13 प्रतिशत लड़कियां हैं। मुरादाबद के 60 हज़ार बाल मज़दूरों में 82 प्रतिशत लड़के और 18 प्रतिशत लड़किया हैं। इनमें से 64 प्रतिशत 11 से 14 वर्ष के हैं और शेष इससे भी कम आयुवर्ग के हैं।

काम करने वाले इन बच्चों के अभिभावकों की औसत आय 945 रुपये महीना है। अलीगढ़ के ताला उद्योग में बच्चे औसतन दस घण्टे प्रतिदिन काम करते हैं और उनकी औसत मासिक आय 255 रुपये है। मुरादाबाद में 85 प्रतिशत बच्चे प्रतिदिन 8 घण्टे काम करते हैं।

89 प्रतिशत बच्चे अपने अभिभावकों की बेरोजगारी और ग़रीबी के कारण काम करते हैं जबकि शेष को उनके अभिभावकों ने छोड़ दिया है। अधिकांश बाल मज़दूर और उनके अभिभावक निरक्षर हैं। दोनों जगहों के बच्चे पढ़ना चाहते हैं पर वे इसमें सक्षम नहीं हैं।

अक्टूबर क्रान्ति की मशाल बुझी नहीं है! बुझ नहीं सकती!

(पृष्ठ 1 का शेष)

लेनिन और फिर स्तालिन के नेतृत्व वाली सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में स्थापित सर्वहारा सत्ता -- **सर्वहारा अधिनायकत्व** ने अबतक सम्पत्ति का अपहरण करने वालों की ही सम्पत्ति का अपहरण कर लिया और फिर **ज्ञात इतिहास में पहली बार उत्पादन के साधनों -- यानी कल-कारखानों, खेतों, संचार-यातायात के साधनों आदि पर निजी स्वामित्व का खात्मा कर दिया गया।** इस सोच को गलत ही नहीं बल्कि उल्टा साबित कर दिया गया कि खेतों और कारखानों पर निजी मालिकाने के बिना समाज का कामकाज चल ही नहीं सकता। कामकाज चला ही नहीं बल्कि दौड़ा, और अद्भुत, चमत्कारी रफ्तार से दौड़ा! उत्पादन और भौतिक प्रगति के सभी पुराने रिकार्ड टूट गये और मानदण्ड छोटे पड़ गये!

यह सन्नाटा तूफ़ान की पूर्वबेला है! टूटने भी लगा है यह सन्नाटा!!

आज दुनिया भर का पूंजीवादी प्रेस समाजवाद पर चाहे जितना कीचड़ उछाल ले, तमाम झूठ-फरेब के बावजूद इस सच्चाई को उसे आज से पचास वर्षों पहले ही स्वीकारने के लिए मजबूर होना पड़ा था कि 1917 के बाद सोवियत संघ में वैज्ञानिक-मशीनी तरक्की और आम मेहनतकशों की चेतना, हुनर, शिक्षा, संस्कृति वगैरह की तरक्की की रफ्तार इतनी तेज थी कि जो चीजें हासिल करने में पश्चिमी यूरोप के देशों को करीब दो सौ वर्षों का समय लगा वह उसने सिर्फ 20-25 वर्षों में हासिल कर लिया। **फ्रांसिसी क्रान्ति** और इंगलैण्ड की **औद्योगिक क्रान्ति** के बाद पश्चिमी दुनिया में जो भी तरक्की पूंजीवादी रास्ते से हासिल हुई थी, उसके साथ ही धनी-गरीब के बीच की खाई भी तेज रफ्तार से बढ़ती चली गई थी और पूंजीपतियों के जनवाद की यह असलियत सामने आती चली गई थी कि वह धनिकों के बीच की स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व है जबकि गरीबों-मेहनतकशों के ऊपर तानाशाही है। यह स्वाभाविक था, क्योंकि पश्चिम में सारी तरक्की जनता की खुशहाली और न्याय के लिए नहीं बल्कि नई-नई मशीनों द्वारा मेहनतकशों को निचोड़कर ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए पूंजीपतियों में लगी होड़ का नतीजा थी। दूसरी ओर सोवियत संघ में निजी मालिकानें के बलपूर्वक खात्मे के बाद मुनाफाखोरी और लूट के मूल एवं मुख्य आधार को खत्म करके मेहनतकश जनता की राज्यसत्ता ने आम लोगों को पहली बार अपनी तरक्की के लिए उत्पादन का अवसर दिया तथा साथ ही सांस्कृतिक शैक्षिक तरक्की और जिन्दगी की हर तरह की बेहतरी के लिए भी खुद अपनी पहल पर काम करने का मौका दिया।

इसी का नतीजा था कि समाजवादी विकास ने जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने और पूरे सोवियत संघ को उन्नत औद्योगिक देशों की कतार में ला खड़ा करने के साथ ही समाज में ज्यादा से ज्यादा समानता स्थापित की और हजारों वर्षों से कायम विशेषाधिकारों, भौतिक-सांस्कृतिक अंतरों और उनकी जमीन के मौजूद रहने के बावजूद पूंजीपतियों, भूस्वामियों, नौकरशाहों, सट्टेबाजों, व्यापारियों आदि सभी तरह के परोपजीवी वर्गों के प्रत्यक्ष शोषण को दो दशकों के भीतर ही समाप्त कर दिया। समाजवाद के रास्ते ने उद्योगों और खेतीबाड़ी की अभूतपूर्व तरक्की के साथ ही निःशुल्क एवं समान शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आदि सुविधाओं को सर्वसुलभ बना दिया तथा बेरोजगारी का पूरी तरह खात्मा कर दिया। गौरतलब बात यह है कि **उद्योगों पर समूची जनता का मालिकाना स्थापित करके** (यानी मेहनतकशों की राज्यसत्ता के अंतर्गत राष्ट्रीकरण करके) और **खेती का सामूहिकीकरण करके** (यानी खेतों में काम करने वाले सभी किसानों के सामूहिक मालिकाने वाले बड़े फार्म स्थापित करके) सोवियत संघ ने ऊपर गिनाई गई उपलब्धियां उस समय हासिल की जब पूरी पूंजीवादी दुनिया **महामंदी** (1930-40 के बीच) के भंवरों में पछाड़ खा रही थी।

स्तालिन के भूत से आज भी क्यों डरते हैं पूंजीपति और क्यों उन्हें आज भी गाली देते हैं उनके भाड़े के टट्टू?

समाजवाद के महान निर्माता **स्तालिन** के बारे में आज पूंजीवादी अखबारों के दो कौड़ी के भाड़े के टट्टू भी तरह-तरह के झूठ गढ़ रहे हैं। हम उन्हें सिर्फ याद दिलाना चाहते हैं कि कभी पूंजीवादी दुनिया के **एच.जी.वेल्स, रोम्यां रोलां, बर्नार्ड शॉ, बर्ट्रेण्ड रसेल, चार्ली चैप्लिन** आदि और भारत के **लाला लाजपत राय, गणेश शंकर विद्यार्थी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, नेहरू, प्रेमचंद** आदि जैसे महापुरुषों ने भी स्तालिन और सोवियत संघ की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। हम यह भी याद दिलाना चाहते हैं कि साम्राज्यवादी कुत्तों की गलाकाटू होड़ ने जब दूसरे महायुद्ध को और फासिस्ट-नात्सी भस्मासुरों को जन्म दिया तो हिटलर की सिर्फ 54 डिवीजनों ने लगभग पूरे यूरोप को रौंदकर विश्व विजय का खतरा पैदा कर दिया था। उस समय उसकी 200 डिवीजनों का मुकाबला करते हुए सोवियत जनता और लाल सेना ने हिटलर की पूरी सत्ता को ही तबाह कर डाला था। इसमें दो करोड़ सोवियत जनता ने अपनी बेमिसाल कुर्बानी स्तालिन की बहुप्रचारित "तानाशाही" के डर से नहीं बल्कि समाजवाद और विश्व मानवता की हिफाजत के लिए दी थी। उस समय तो **रुजवेल्ट, चर्चिल और दगॉल** भी स्तालिन की बड़ाई कर रहे थे और पीछे-पीछे चल रहे थे तथा पश्चिमी अखबार उन्हें **"चाचा स्तालिन"** ('अंकल जो') कह रहे थे, पर विश्वयुद्ध समाप्त होते ही स्तालिन को फिर तानाशाह कहा जाने लगा और सोवियत संघ नामक "शैतानी राज्य" को तबाह कर दिये जाने का आह्वान किया जाने लगा। यह है पूंजीवाद का दोगलापन, जो स्वयंसिद्ध है।

पर दुनिया के पूंजीवादी इतिहासकार आज भी इस तथ्य से इंकार नहीं कर पाते कि अक्टूबर क्रान्ति के तोपों के धमाकों ने दुनिया भर के मेहनतकशों को पूंजी की सत्ता के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा देने के साथ ही एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका की जनता के उपनिवेशवाद विरोधी संघर्षों को भी जबरदस्त उछाल देने का काम किया। सोवियत संघ लगातार औपनिवेशिक गुलामी के विरुद्ध लड़ने वाले क्रान्तिकारियों को और आम जनता को प्रेरणा देता रहा और यथासंभव मदद भी। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पूर्वी यूरोप में भी सर्वहारा सत्ताएं स्थापित हुईं और चीन में **माओ** और **कम्युनिस्ट पार्टी** के नेतृत्व में हुई **नई जनवादी क्रान्ति** ने अक्टूबर क्रान्ति के बाद एक और, नया मील का पत्थर कायम किया। शक्तिशाली समाजवादी खेमे की मौजूदगी ने एशिया, अफ्रीका, लातिन अमेरिकी देशों की जनता पर कायम औपनिवेशिक और नवऔपनिविशिक शिंकजे को ढीला करने में भी अहम भूमिका निभाई।

पर **इतिहास कभी भी सीधी रेखा में आगे नहीं बढ़ता। यह आती-जाती लहरों के रूप में, ज्वार और भाटे के रूप में आगे बढ़ता है, सर्पिल रास्तों से होकर, अनेकों मोड़ों और घुमावों से होकर आगे बढ़ता है।**

समाजवाद की फिलहाली हार के बुनियादी कारण क्या है? यह जानना बेहद जरूरी है!

समाजवादी समाज पूरी तरह वर्गविहीन, शोषणविहीन समाज नहीं होता, बल्कि **इसकी शुरुआती अवस्था** होता है। वह पूंजीवाद और कम्युनिज्म के बीच का -- **वर्ग समाज और वर्गविहीन समाज के बीच का काल** होता है; **कम्युनिज्म की सिर्फ प्रथम अवस्था** होता है। मेहनतकश वर्ग इस दौरान बलपूर्वक सम्पत्तिवान, परजीवी वर्गों पर शासन कायम करके उत्पादन के साधनों पर से उनका स्वामित्व छीन लेता है; पर ये पुराने शोषक-शासक अपनी उसी लुटेरी मानसिकता और अपने "खोये हुए स्वर्ग" को फिर से पाने की चाहत के साथ समाज में मौजूद होते हैं। इसके साथ ही छोटे पैमाने पर (गांव के मंझोले व छोटे किसानो, छोटे उद्यमियों-कारोबारियों आदि के बीच) पूंजीवादी किस्म का उत्पादन समाजवाद के शुरुआती समयों में लम्बी अवधि तक मौजूद रहता है, निजी स्वामित्व छोटे पैमाने पर मौजूद रहता है और आम जनता के एक अच्छे खासे हिस्से के भीतर धनी बनने की और मुनाफा कमाने की पुरानी बीमारी भी मौजूद रहती है। **यह छोटे पैमाने का पूंजीवादी उत्पादन नये-नये पूंजीवादी तत्वों और मानसिकता को समाजवाद के भीतर नये सिरे से पैदा भी करता रहता है। इसके अलावा समाजवादी समाज में भी शारीरिक श्रम और मानसिक श्रम करने वालों के बीच, कारखानों में काम करने वाले और खेतों में काम करने वालों के बीच तथा गांव में रहने वालों और शहर में रहने वालों के बीच का अंतर** भी मौजूद रहता है। इसके अतिरिक्त, समाजवाद के बहुत आगे की मंजिल में ही यह संभव हो सकता है कि लोग क्षमता मुताबिक काम करते हैं और जरूरत मुताबिक पा है। शुरू में तो लम्बे समय तक यही हो सकता कि लोग जितना श्रम करें उसी के हिसाब से उ मजूरी मिले। अब चूंकि लोगों की श्रम करने प्राकृतिक क्षमता एक नहीं होती, इस कारण से समाजवाद के शुरूआती लम्बे समय में असमान पैदा होने का एक आधार मौजूद रहता है।

कुल मतलब यह कि उत्पादन के साधनों पूरे समाज का मालिकाना कायम करना शोषण अ असमानता के खात्मे का **सबसे जरूरी पहला कद** है, पर यही **सब कुछ नहीं।** इसके बाद भी समा में असमानता और पूंजीवाद के उतने किस्म उत्पादन केन्द्र और पालन-पोषण केन्द्र मौजूद रह

मिट्टी में दबे हुए अंकुरित हो रहे हैं अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण के बीज

हैं, जो ऊपर गिनाये गये हैं। इन्ही कारणों समाजवादी समाज के भीतर भी नये किस्म पूंजीवादी तत्व मजबूत होते जाते हैं और समय र इन खर-पतवारों को नष्ट करके जमीन की अच तरह निराई-गुड़ाई और कीटनाशकों का छिड़काव किया जाये तो यह समाजवाद की पूरी फसल तब कर डालते हैं। **ये नये पूंजीवाद तत्व कम्युनि पार्टी और सर्वहारा राज्यसत्ता पर काबिज जाते हैं और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना हो जा है।**

1954 में स्तालिन की मृत्यु के बाद सोवि संघ में यही हुआ। ख्रुश्चेव के नेतृत्व में वहां नये किस्म का पूंजीवाद बहाल हो गया -- "समाजवा मुखौटे और नकली लाल झण्डे वाला, सरकारी राजकीय पूंजीवाद -- बहुत कुछ हमारे देश के 'पब्लि सेक्टर' जैसा! 1990 में यह मुखौटा भी गिर ओर महान अक्टूबर क्रांति के देश में एक बार फि खुला पूंजीवाद बहाल हो गया।

सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति ने दिखलायी नई रा

दरअसल महान स्तालिन भी समाजवाद भीतर मौजूद और नये सिरे से पनपने वाले बुर्जु तत्वों को पहचान नहीं सके, उनके द्वारा समाज की हार के खतरे को देख नहीं सके और उ विरुद्ध सतत् क्रान्ति चलाते हुए कम्युनिज्म की दि में आगे बढ़ने की राह नहीं निकाल सके। इस दि में महान लेनिन ने सोचना जरूर शुरू किया था, वक्त ने उन्हें मौका नहीं दिया और 1924 में उन निधन हो गया। स्तालिन की गलतियों ओर चीन समाजवादी प्रयोगों से सबक लेकर **माओ त्से-तुंग** इस महान काम को अंजाम दिया और **मह सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति** का वह प्रयोग किया विश्व सर्वहारा क्रान्ति के डेढ़ सो वर्षों के इति में **पेरिस कम्यून** और **अक्टूबर क्रान्ति** के कायम **तीसरा कीर्ति स्तम्भ** है। हालांकि चीन में माओ की मृत्यु के बाद पूंजीवादी तत्व सत्ता काबिज हो गये और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना गई, पर इससे सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का म कम नहीं होता क्योंकि **पहली बार इस म**

क्रांति ने पूंजीवादी पुनर्स्थापना को रोकने, पूंजीवादी तत्वों को लगातार कमजोर करते जाने और वर्गविहीन समाज की दिशा में आगे बढ़ते जाने की ठोस, स्पष्ट राह बतलाई थी।

मेहनतकश अवाम अगर इतिहास से शिक्षा लेकर क्रांति के विज्ञान की समझ नहीं हासिल करेगा तो पूंजीपति वर्ग और उसके भोंपुओं के भ्रामक प्रचारों से मुक्त नहीं हो पायेगा और यह मानता रहेगा कि समाजवाद की हार हो गई है, वह असफल सिद्ध हो गई। पूंजीवादी समाज की विपत्तियों से तंग, परेशान-बदहाल होकर वह समय-समय पर विद्रोह भी करता रहेगा, लेकिन समाजवाद की अंतिम जीत में विश्वास और क्रान्ति के विज्ञान की समझ के अभाव में वह कभी भी पूंजीवाद का नाश नहीं कर सकेगा क्योंकि पूंजीवाद का एकमात्र विकल्प समाजवाद ही है।

अमर नहीं है पूंजीवाद! इसे मरना ही है!

हमें इस बात को अच्छी तरह से समझना होगा कि अतीत में भी क्रान्तियों के शुरुआती संस्करण असफल होते रहे हैं। सात-आठ सौ वर्षों तक कई दास विद्रोह कुचल दिये गये, तब कहीं जाकर दास प्रथा के युग का पूरी दुनिया से खात्मा हो सका था। सामन्तवर्ग से संघर्ष करते हुए निर्णायक विजय हासिल करने में और पूंजीवादी सामाजिक ढांचे का निर्माण करने में पूंजीपति वर्ग को तकरीबन चार सौ वर्षों का समय लग गया। फिर इसमें निराश या भग्नहृदय होने की भला क्या बात हो सकती है कि समाजवादी क्रान्ति फिलहाल कुछ समय के लिए सदियों से जड़ जमाये पूंजीवाद से हार गई है और सर्वहारा वर्ग को फौरी तौर पर पीछे हट जाना पड़ा है! और फिर हमें यह भी तो याद रखना होगा कि समाजवादी क्रांति मानव इतिहास की सर्वाधिक व्यापक, गहरी और बुनियादी क्रांति है, क्योंकि पहले की सभी क्रान्तियों ने एक पुरानी पड़ चुकी शोषण की व्यवस्था की जगह एक नये प्रकार की शोषण की व्यवस्था की स्थापना की जबकि समाजवादी क्रान्ति का लक्ष्य सभी वर्ग व्यवस्थाओं का, हर तरह के शोषण का और हर तरह की असमानता का नाश करना है। राज्यसत्ता पर सर्वहारा वर्ग के काबिज होने के बाद लम्बे समय के संघर्ष में ही यह संभव हो सकता है और इस लंबे संक्रमण काल के दौरान एक से अधिक बार सर्वहारा वर्ग को हार का सामना भी करना पड़ सकता है।

हमें यह बात ठीक से समझ लेनी होगी कि प्रकृति और समाज की कोई भी चीज, कोई भी ऐतिहासिक युग और कोई भी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था अमर नहीं होती। पूंजीवाद भी अजर-अमर नहीं है। दास प्रथा और सामंत प्रथा की तरह पूंजी की उजरती गुलामी की प्रथा भी आज मानव समाज के पैरों की बेड़ी बन चुकी है जो उसके आगे नहीं बढ़ने दे रही है। अतः, **निश्चित ही,** मानवता इन बेड़ियों को तोड़ फेंकेगी।

समूचे विश्व पूंजीवाद और इसके शीर्ष पर आसीन साम्राज्यवादी देशों तक की अर्थव्यवस्था आज एक लम्बी मन्दी और ठहराव के ऐसे ढांचागत संकट से ग्रस्त है **जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था।** हालत बताते हैं कि इसकी मृत्यु अब सुदूर भविष्य की बात नहीं है। तबतक यह केवल घिसट-घिसटकर सांसे गिन सकता है जबतक कि मेहनतकश अवाम फिर से संगठित होकर इसके नाश की लड़ाई न छेड़ दे।

हालांकि पूरी दुनिया में अभी क्रान्ति की लहर पर प्रतिक्रान्ति की लहर हावी है, पर दुनिया के अलग-अलग कोनों से एक नये उभार के पूर्वसंकेत मिलने शुरू हो चुके है। रूस, भूतपूर्व सोवियत संघ के दूसरे घटक देशों में, और पूर्वी यूरोप के देशों में मेहनतकश जनता ने नकली समाजवाद का गंदा चेहरा तो पहले ही देख लिया था, अब वह पश्चिमी दुनिया के "स्वर्ग" की असलियत भी जान चुकी है। विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के साथ मिलते ही इन देशों की कमजोर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था गंभीर संकट के भंवर में जा फंसी है तथा बेरोजगारी, मंहगाई, अभाव और भ्रष्टाचार की मार झेलती और मुट्ठी भर लोगों के धनी होने की कीमत अपनी कंगाली से चुकाती जनता एक बार फिर सड़कों पर उतर चुकी है। **उसके एक अच्छे खासे हिस्से के हाथ में आज लेनिन और स्तालिन के पोस्टर और लाल परचम हैं और लबों पर सच्चे समाजवाद की बहाली के नारे हैं।** वहां कई क्रांतिकारी कम्युनिस्ट संगठन नई अक्टूबर क्रांति की रणनीति पर बहसें चला रहे हैं और पश्चिम के पूंजीवादी अखबार भी इन देशों में **"बोल्शेविक पुनरुत्थान"** की खबरें छाप रहे हैं। माओ के देश की जनता भी सोई नहीं हैं। वहां देङ सियाओं पिङ के "बाजार समाजवाद" नामधारी पूंजीवाद के खिलाफ किसानों ओर युवाओं की बगावतें हो रही हैं और बदनाम करने की तमाम कोशिशों के बावजूद जनता महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दिनों को याद कर रही है!

जाहिर है कि **सन्नाटा टूटने लगा है। मिट्टी में दबे अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण के बीज अंकुरित होने लगे हैं।**

लातिन अमेरिकी देशों में किसानों-मजदूरों के आंदोलन और छापमार संघर्षों का नया सिलसिला शुरू हो चुका है। और अब **एशिया** भी जग रहा है। **इण्डोनेशिया** के ताजा जन-उभार से हुई शुरुआत की आहटें **भारतीय उपमहाद्वीप** तक में सुनाई पड़ रही हैं। भारत की जनता भी सोई नहीं रह सकती। नई आर्थिक नीतियों के अमल ने साम्राज्यवाद और देशी पूंजीवाद की लूट और लगातार बढ़ती मंहगाई-बेरोजगारी-असमानता और भ्रष्टाचार को जिन आखिरी हदों तक पहुंचा दिया है, वहां पहुंचना एक जागते ज्वालामुखी के दहाने पर पहुंचने के समान है।

जाहिरा तौर पर, भारतीय मेहनतकश अवाम को भी अपना ऐतिहासिक मिशन पूरा करने के लिए आगे कदम बढ़ाना होगा। यह पूरी दुनिया की तरह भारत में भी **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण** और **नये सर्वहारा ज्ञानोदय का दौर है। आर्थिक नवउपनिवेशवाद के इस नये दौर में भारतीय सर्वहारा वर्ग और मेहनतकश जनता को साम्राज्यवाद और उसके जूनियर पार्टनर बने भारतीय पूंजीपतिवर्ग की राज्यसत्ता को उखाड़कर पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली को ही नष्ट कर देना है तथा राज्यसत्ता उत्पादन और समाज के पूरे तंत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेना है। यही क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य के नारे का मतलब है। यही है भारत की नई समाजवादी क्रान्ति जो आज की नई परिस्थितियों के अनुरूप अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति का एक नया संस्करण है।**

भारत के मेहनतकशों को अक्टूबर क्रान्ति के दिखाये मार्ग पर आगे बढ़ना होगा, नये सिरे से अपनी नई, नये ढंग की इंकलाबी पार्टी बनानी होगी और अपने देश की जमीन पर मौलिक ढंग से अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण की आधारशिला स्थापित करनी होगी।

इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए जरूरी है कि हम दुनिया की पहली समाजवादी क्रान्ति के प्रयोग के सारतत्व को, उसके निचोड़ को, उसकी सबसे बुनियादी शिक्षाओं को गांठ बांध लें। वे क्या हैं?

अक्टूबर क्रान्ति की सबसे बुनियादी शिक्षाएं

1. सर्वहारा क्रान्ति की सबसे पहली जरूरत है सर्वहारा वर्ग की, पूरे देश के स्तर पर संगठित एक क्रान्तिकारी पार्टी। यह क्रान्तिकारी पार्टी लेनिन के मार्गदर्शन में निर्मित बोल्शेविक पार्टी की तरह संघर्षों की आग में तपकर इस्पात बनी हो, पूंजीवाद की सशस्त्र सेना-पुलिस से लैस राज्यसत्ता से लोहा लेने में सक्षम हो (न कि महज चुनावबाजी और ट्रेडयूनियनबाजी का धंधा करती हो) औद्योगिक सर्वहारा और ग्रामीण सर्वहारा में ही नहीं बल्कि बहुसंख्यक गरीब व परेशानहाल मंझोले किसानों में भी इसकी गहरी पैठ हो और यह अपने देश की परिस्थितियों की समझ के आधार पर क्रान्ति का कार्यक्रम और रास्ता तय करने में सक्षम हो, तभी यह अक्टूबर क्रान्ति का नया संस्करण तैयार कर सकती है।

अमर नहीं है पूंजीवाद! उसका संहार होगा नई समाजवादी क्रान्ति के हाथों!!

2. जब हम अक्टूबर क्रान्ति के पहले के रूस में करीब बीस वर्षों तक जारी, ऐसी पार्टी के निर्माण और गठन की प्रक्रिया पर निगाह डालते हैं तो यह सच्चाई दिन की रोशनी की तरह साफ हो जाती है कि कठिन विचारधारात्मक संघर्ष अटल विचारधारात्मक दृढ़ता और गहरी विचारधारात्मक समझ के बिना कोई सच्ची सर्वहारा पार्टी क्रान्ति करना तो दूर, गठित ही नहीं हो सकती और यदि गठित हो भी गई तो जल्दी ही बिखर जायेगी। लेनिन और उनके साथी बोल्शेविकों ने एकदम अलग-थलग पड़ जाने का खतरा मोल लेते हुए भी विचारधारा के प्रश्न पर कोई समझौता नहीं किया और मार्क्सवाद की क्रान्तिकारी विचारधारा में किसी भी तरह की मिलावट की मेंशेविकों और कार्ल काउत्स्की के चेलों की साजिशों को एकदम से खारिज कर दिया। उन्होंने पार्टी को कभी भी चवन्निया मेंबरी वाली महज चुनावबाज, यूनियनबाज, धंधेबाज संगठन नहीं बनने दिया। दांवपेंच के रूप में लेनिन की पार्टी ने पूंजीवादी चुनावों और संसद का भी इस्तेमाल किया और ट्रेड यूनियनों में काम करते हुए आर्थिक संघर्ष भी लगातार चलाये तथा जनता को जगाने के लिए विभिन्न प्रकार की राजनीतिक सुधारपरक कार्रवाईयां भी कीं, पर पार्टी ने इस बात को कभी नहीं भुलाया कि बिना बल प्रयोग और हिंसा के, महज चुनावों के जरिए शोषक वर्गों से सत्ता छीनी नहीं जा सकती। वे पूंजीवादी राज्यसत्ता की सैन्य शक्ति और दमनतंत्र से उखाड़ फेंकने के लिए क्रान्तिकारी तैयारी लगातार करते रहे और एक बार फिर अक्टूबर क्रान्ति में इस बात को सही साबित किया कि शोषक वर्ग कभी भी समझाने-बुझाने या अल्पमत-बहुमत से सत्ता नहीं सौंप सकते। अक्टूबर क्रान्ति की इस शिक्षा को याद रखने का मतलब यह है कि भारत का सर्वहारा वर्ग भी भा.क.पा., मा.क.पा., भा.क.पा. मा-ले (विनोद मिश्र का लिबरेशन गुप) और ऐसे तमाम सुधारवादी, अर्थवादी, पूंजीवादी संसदवादी कम्युनिस्ट संगठनों के भ्रमजालों से बाहर आकर कम्युनिज्म के सही क्रान्तिकारी चरित्र को पहचाने। ये सभी मदारी मेंशेविकों और काउत्स्कीपंथियों के उन सिद्धान्तों को ही नये लेबल लगाकर पेश करते हैं जिनके खिलाफ लगातार लड़कर बोल्शेविक पार्टी ने विचारधारात्मक दृढ़ता हासिल की और तभी जाकर अक्टूबर क्रान्ति विजयी हो सकी।

3. साथ ही, अक्टूबर क्रान्ति और उसके नेता लेनिन की यह भी शिक्षा है कि क्रान्ति मुट्ठी भर समझदार और बहादुर क्रान्तिकारी नहीं, बल्कि व्यापक मेहनतकश जनता करती है। बहादुर और समझदार क्रान्तिकारी उस मेहनतकश जनता के हरावल दस्ता होते हैं जो जनता के रोजमर्रे की छोटी-छोटी लड़ाइयों में हिस्सा लेते हुए, ट्रेड यूनियनों (बुर्जुआ और प्रतिक्रियावादी ट्रेड यूनियनों में भी) भागीदारी करके आर्थिक मांगों पर और साथ ही राजनीतिक मांगों पर भी लड़ते हुए, संभव होने पर रणकौशल के तौर पर पूंजीवादी चुनाव और संसद में भी भागीदारी करते हुए जनता की राजनीतिक चेतना का ज्यादा से ज्यादा क्रान्तिकारीकरण करते हैं और उसे शासक वर्गों के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष के लिए तैयार करते हैं। अर्थवाद और संसदवाद के विरोध के नाम पर इन सभी रूपों-रणकौशलों को छोड़कर किसी भी रूप में महज हथियारबंद कार्रवाइयों पर जोर देना वामपंथी दुस्साहसवाद, या "अतिवामपंथ" का मध्यमवर्गीय भटकाव है जिसका फायदा अंततोगत्वा भाकपा-माकपा ब्रांड नकली कम्युनिस्टों और पूंजीवादी सत्ता को ही मिलता है।

4. अक्टूबर क्रान्ति का निचोड़ निकालते हुए लेनिन ने सैकड़ों बार विचारधारात्मक दृढ़ता को स्पष्ट किया था और कहा था कि वर्ग संघर्ष और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को कभी न भूलो। इनको भूलने का मतलब ही है पूंजीवादी जनवाद और शांतिपूर्ण संक्रमण के भ्रमजालों में जा फंसना और क्रान्ति के मार्ग को भूल जाना। हालात में चाहे जो भी बदलाव आ जाये, यदि पूंजीवाद पूंजीवाद है तो इसका अर्थ है कि राज्यसत्ता पूंजीपति वर्ग के हाथों में है, जिसे सिर्फ बलपूर्वक ही उखाड़ा जा सकता है और शोषक वर्गों को तबतक बलपूर्वक दबाये रखना पड़ेगा जबतक कि वर्ग के रूप में उनका अस्तित्व कायम रहेगा। आगे चलकर अक्टूबर क्रान्ति की इस शिक्षा को माओ ने महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान पुष्ट करने के साथ ही आगे विकसित किया और बताया कि सर्वहारा वर्ग राज्यसत्ता पर काबिज होने के बाद एक लंबे समय तक यदि अपने अधिनायकत्व के अंतर्गत सभी पूंजीवादी तत्वों के विरुद्ध सतत् क्रान्ति नहीं चलायेगा और पूंजीवादी मूल्यों-विचारों-संस्थाओं के विरुद्ध सतत् सांस्कृतिक क्रान्ति नहीं चलायेगा तो पूंजीवाद की पुनर्स्थापना अवश्यंभावी होगी।

अक्टूबर क्रान्ति की मशाल से पूंजीवादी जंगल राज में दावानल भड़काने के लिए इन शिक्षाओं को दिल में भली भांति बैठा लेना होगा, हर तरह के कठमुल्लेपन से मुक्त होकर आज की दुनिया और अपने देश की पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली, सामाजिक संरचना और राज्यतंत्र की सही समझ कायम करनी होगी और लगातार क्रान्तिकारी कार्रवाईयों में धीरज तथा मुस्तैदी के साथ सन्नद्ध होकर एक ऐसी क्रान्तिकारी पार्टी का पुनर्गठन करना होगा जो अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण के निर्माण में सक्षम हो। ●

नारी सभा

अक्टूबर क्रान्ति के दिनों की वीरांगनाएं

● अलेक्सांद्रा कोल्लोन्ताई

वे कौन नारियां थीं, जिन्होंने महान अक्टूबर क्रान्ति में हिस्सा लिया था? क्या वे अलग-अलग व्यक्ति थीं? नहीं, उनकी संख्या बहुत बड़ी थी; दसियों, सैकड़ों-हजारों अनाम नायिकायें जिन्होंने लाल झण्डे और सोवियतों के नारे के पीछे मजदूरों और किसानों के कंधे से कंधा मिलाकर मार्च करते हुए धर्मकेन्द्रित जारशाही के ध्वंसावशेषों के ऊपर से गुजरकर एक नूतन भविष्य में प्रवेश किया.....

यदि कोई पीछे मुड़कर अतीत पर नजर डाले तो वह उन्हें देख सकता है -- इन अनाम नायिकाओं की आबादी को, जिन्हें अक्टूबर ने भूख से मरते शहरों और लड़ाई में लूटे गये गरीब गांवों में पाया था.... सर पर रूमाल बांधे (हालांकि इनमें लाल रूमाल अभी बहुत कम ही थे), घिसा हुआ घाघरा और रूई भरा जाड़े का जैकेट पहने... जवान और वृद्ध, मजदूरिनें और सिपाहियों की पत्नियां, किसान औरतें और शहर के गरीबों की गृहणियां। इनमें दफ्तरों में काम करने वाली या अन्य पेशों में लगी औरतें, शिक्षित और सुसंस्कृत औरतें कम, खासतौर पर इन दिनों में, बहुत ही कम थीं। लेकिन लाल झण्डे को अक्टूबर की विजय तक पहुंचाने वालों में बुद्धिजीवी वर्ग से आई नारियां भी थीं -- अध्यापिकायें, दफ्तरों में काम करने वाली स्त्रियां, हाई स्कूलों और विश्वविद्यालयों की तरुण छात्राएं, महिला चिकित्सिकायें। वे खुशी-खुशी, निःस्वार्थ भाव से और निश्चित उद्देश्य के साथ चलती गयीं। जहां भी उन्हें भेजा गया, वे गयीं। मोर्चे पर? उन्होंने सिपाही की टोपी लगायी और लाल सेना की योद्धायें बन गयीं। अगर उन्होंने बांहों पर लाल पट्टियां लगा लीं तो वे गात्विना (लेनिनग्राद के पास का एक उपनगर) में केरेन्सकी के विरुद्ध लाल सेना की मदद के लिए प्राथमिक चिकित्सा स्टेशनों की ओर लपक रही होती थीं। वे सेना की संचार व्यवस्था में काम करती थीं। वे बेहद जिन्दादिली के साथ काम करती थीं। इस विश्वास से भरी हुई कि कोई भारी महत्व की चीज घटित हो रही है और हम सब क्रान्ति की एक ही श्रेणी के छोटे-छोटे पुर्जे हैं।

गांवों में किसान औरतों ने, जिनके पति मोर्चे पर भेज दिये गये थे, भूस्वामियों से जमीन छीन ली और अभिजातों को उनके घोंसलों से बाहर खदेड़ दिया जिनमें वे सदियों से पल रहे थे।

जब भी अक्टूबर की घटनाओं का स्मरण किया जाता है तो अलग-अलग चेहरे नहीं, बल्कि जनसमूह दिखायी पड़ते हैं। असंख्य जनसमूह, मानवता की लहरों की तरह। पर जहां भी नजर डाली जाये औरतें दिखायी देती हैं -- बैठकों में, सभाओं में, प्रदर्शनों में।... अभी वे निश्चित नहीं है कि वे ठीक-ठीक क्या चाहती हैं, किसके लिए वे प्रयासरत हैं। लेकिन वे एक चीज जानती हैं : वे अब युद्ध को और बर्दाश्त नहीं करेंगी। और न ही वे भूस्वामियों और अमीरों को चाहती हैं... 1917 के वर्ष में मानवता का महासमुद्र उफनता और हिलोरें लेता है, और उस महासमुद्र का एक भारी हिस्सा औरतों से बना हुआ है...

एक दिन इतिहासकार क्रान्ति की उन अनाम नायिकाओं के कारनामों के बारे में लिखेगा जो मोर्चे पर मारी गयीं, जिन्हें श्वेत गार्डों ने गोली से उड़ा दिया, जिन्होंने क्रान्ति के बाद आने वाले पहले वर्षों के अनगिनत अभावों को झेला लेकिन सोवियत सत्ता और कम्युनिज्म के लाल निशान को ऊंचा उठाये रखा। इन्हीं अनाम नायिकाओं के प्रति, जो मेहनतकश लोगों के लिए एक नया जीवन हासिल करने के लिए अक्टूबर क्रान्ति के दौरान शहीद हुईं, युवा गणतंत्र सम्मान में अपना सिर झुकाता है, जबकि इसके जिंदादिल और उत्साही युवा लोग समाजवाद के आधारों के निर्माण में लग रहे है।

परन्तु स्कार्फों और घिसी टोपियों से ढंके औरतों के सिरों के इस समुद्र में से अनिवार्यतः उन लोगों की छवियां उभरती हैं जिनपर इतिहासकार विशेष ध्यान देगा जब आज से कई साल बाद वह महान अक्टूबर क्रान्ति और इसके नेता लेनिन के बारे में लिखेगा।

सबसे पहली जो छवि उभरती है, वह है लेनिन की वफादार संगिनी **नादेज्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना क्रुप्सकाया** की -- अपनी सादी, स्लेटी पोशाक पहने हुए, हमेशा पृष्ठभूमि का प्रयास करते हुए। वे बिना किसी का ध्यान आकर्षित हुए, चुपचाप, किसी बैठक में प्रवेश कर जातीं और किसी खम्भे के पास खड़ी हो जातीं। पर वे एक-एक चीज देखती और सुनती थीं, जो कुछ भी हो रहा होता, उसका अध्ययन करते हुए, ताकि फिर वे ब्लादीमिर इलिच को पूरा विवरण दे सकें, अपनी सटीक टिप्पणियां जोड़ सकें और कोई युक्तिपूर्ण, उपयुक्त और उपयोगी विचार सुझा सकें। उन दिनों नादेज्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना उन ढेरों तूफानी बैठकों में नहीं बोलती थीं जिनमें लोग इस महान प्रश्न पर बहस करते थे कि सोवियत सत्ता जीतेगी या नहीं? परन्तु वे अनथक रूप से ब्लादीमिर इलिच के दाहिने हाथ की तरह काम करती थीं और कभी-कभी पार्टी बैठकों में कोई संक्षिप्त पर प्रभावकारी वक्तव्य देती थीं। भंयकर विपत्ति और खतरे के क्षणों में भी, जब अनेक मजबूत कामरेड हिम्मत हार बैठे और संशय के शिकार हो गये, नादेज्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना हमेशा वैसी ही बनी रहीं -- लक्ष्य की सत्यता और इसकी निश्चित विजय के प्रति पूर्ण आश्वस्त। वे अडिग आस्था का स्रोत थीं, और जो कोई भी अक्टूबर क्रान्ति के महान नेता की इस सहचरी के संपर्क में आता था, उस पर विनम्रता के आवरण में ढंकी व्यक्तित्व की यह दृढ़ता हमेशा ही एक स्फूर्तिदायक प्रभाव छोड़ती थी।

एक दूसरी छवि उभरती है -- और वह है लेनिन की एक और वफादार साथी, भूमिगत कार्य के कठिन वर्षों की विश्वस्त दोस्त, पार्टी की केन्द्रीय समिति की सेक्रेटरी -- **येलेना दमीत्रियेव्ना स्तासोवा** की। स्पष्ट, बुद्धिमत्ता पूर्ण और अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक काम करने की असाधारण क्षमता, और किसी काम के लिए सटीक आदमी ढूंढ़ निकालने की विशिष्ट योग्यता। उनकी लम्बी, मूर्तिवत आकृति पहले ताव्रिचेस्की प्रासाद ' (ताव्रिचेस्की प्रासाद - 1917 में मजदूरों और सिपाहियों की पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक जहां हुई थी) की सोवियत में, फिर क्शेसिन्सकाया' (क्शेसिन्सकाया -- फरवरी क्रान्ति के बाद बोल्शेविक पार्टी की पीटर्सबर्ग कमेटी की बैठक बैले नर्तकी क्शेसिन्सकाया के घर पर हुई थी) के घर में और अन्ततः स्मोल्नी में देखी जा सकती थी। अपने हाथों में वे एक नोटबुक लिये होती थी और उनके चारों तरफ मोर्चे से आये कामरेडों, मजदूरों, लाल गार्डों, महिला श्रमिकों और पार्टी तथा सोवियतों का समूह किसी तेज, स्पष्ट उत्तर या निर्देश की प्रतीक्षा में जमा रहता था। स्तासोवा अनेक महत्वपूर्ण मामलों की जिम्मेदारी संभालती थीं, किन्तु यदि उन तूफानी दिनों में कोई साथी किसी विपत्ति या परेशानी में होता था तो वे तत्काल ध्यान देती थीं। वे तत्काल ही उसका कोई संक्षिप्त, ऊपर से रूखा सा लगने वाला जवाब देती थीं और खुद भी जितना बन पड़े करती थीं। वे कामों के बोझ से दबी रहती थीं और हमेशा अपनी जगह पर चुस्त रहतीं। हमेशा अपनी जगह पर.....कभी भी अगली कतार में और प्रतिष्ठा के घेरे में आने का प्रयास न करते हुए। वे कभी भी लोगों के ध्यान के केन्द्र में होना पसन्द नहीं करती थीं। उनकी सारी चिन्ता खुद के लिए नहीं, बल्कि उद्देश्य के लिए थी। कम्युनिज्म के महान और लम्बे समय से संजोये हुए उद्देश्य के लिए, जिसके लिए येलेना स्तासोवा ने निर्वासन और जारशाही जेलों की कैद भोगी जिसने उनके स्वास्थ्य को बुरी तरह तोड़ डाला. ... उद्देश्य के नाम पर वे वज्र की तरह थीं, इस्पात की तरह कठोर, किन्तु अपने साथियों के प्रति वे ऐसी संवेदनशीलता और सहानुभूति प्रदर्शित करती थीं, जो केवल एक स्नेही और उदारहृदया नारी में ही हो सकती है।

क्लोदिया निकोलायेवा बहुत साधारण घर से आयी एक मजदूर औरत थी। वह 1908 में ही, प्रतिक्रिया के वर्षों में बोल्शेविकों के साथ हो गयी थी और निर्वासन और कैद झेल चुकी थी। 1917 में वह लेनिनग्राद लौट आई और मेहनतकश औरतों की पहली पत्रिका 'कम्युनिस्तका' का हृदय बन गयी। वह अभी भी युवा थी और आवेग तथा अधैर्य से भरी हुई थी। किन्तु उसने लाल झण्डे को मजबूती से थामा और निडरतापूर्वक घोषणा की कि मजदूर औरतों, सिपाहियों की पत्नियों और किसान औरतों को पार्टी में लाना चाहिए। औरतो! काम पर चलो! सोवियतों और कम्युनिज्म की रक्षा के लिए चलो!

जब वह बैठकों में भाषण देती थी तो कुछ अधीर और खुद के प्रति पूर्ण आश्वस्त नहीं होती थी, किन्तु फिर भी दूसरों को अपना अनुसरण करने के लिए आकर्षित करती थी। वह उन लोगों में से एक थी, जिन्होंने क्रान्ति में औरतों की व्यापक सामूहिक हिस्सेदारी का रास्ता तैयार करने में आने वाली सारी कठिनाइयां अपने कंधों पर झेली थीं। वह उनमें से एक थी जो एक साथ दो मोर्चों पर लड़े -- सोवियतों और कम्युनिज्म के लिए और उसी समय स्त्रियों की मुक्ति के लिए भी। क्लॉदिया निकोलायेवा और **कोंकोर्दिया समोइलोवा**, जो क्रान्ति के कामों के दौरान हैजे से मर गयी, के नाम मेहनतकश स्त्रियों के आंदोलन के पहले और सर्वाधिक कठिन कदमों के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। कोंकोर्दिया समोइलोवा अद्वितीय निःस्वार्थता वाली पार्टी कार्यकत्री थी। वह एक बढ़िया, व्यावहारिक वक्ता थी और मजदूर औरतों का दिल जीतना जानती थी। जिन्होंने उसके साथ काम किया है वे लम्बे समय तक कोंकोर्दिया समोइलोवा को याद रखेंगे। वह बिल्कुल सादी पोशाक पहनती थी और सरल व्यवहार करती थी, किन्तु निर्णयों का कार्यान्वयन पूरी निष्ठा के साथ करती थी -- खुद के साथ और दूसरों के साथ भी पूरी सख्ती बरतते हुए।

इनेस्सा आरमां की सौम्य और मोहक छवि विशेष रूप से ध्यान खींचती है, जिन पर अक्टूबर क्रान्ति की तैयारी में अत्यन्त महत्वपूर्ण पार्टी कार्य सौंपा गया था और जिन्होंने उसके बाद औरतों के बीच चलाये गये काम में अनेक रचनात्मक विचारों का योगदान किया। अपने व्यवहार की समस्त नारी सुलभ कमनीयता और सौम्यता के बावजूद इनेस्सा आरमां अपने विश्वासों पर अटल थीं और जिसे सही समझती थीं उसकी रक्षा विकट विरोधियों के सामने भी कर सकने में समर्थ थीं। क्रान्ति के बाद इनेस्सा आरमां ने खुद को औरतों का व्यापक आंदोलन संगठित करने में समर्पित कर दिया और औरतों की प्रतिनिधि सभा उन्हीं की रचना है।

मास्को में अक्टूबर क्रान्ति के कठिन और निर्णायक दिनों में वार्वारा निकोलायेवा ने भारी काम किया था। बैरीकेडों की लड़ाई में उसने पार्टी हेडक्वार्टर के नेता के योग्य दृढ़संकल्प का परिचय दिया। बहुत सारे साथियों ने बताया कि उस समय उसके दृढ़ संकल्प और अडिग साहस ने उन्हें हिम्मत बंधायी जो विचलित हो रहे थे और हिम्मत हार बैठे लोगों को प्रेरित किया -- 'आगे बढो!' विजय तक।

महान अक्टूबर क्रान्ति में भाग लेने वाली औरतों की याद करते हुए मानो जादू से स्मृति से एक के बाद एक नाम और चेहरे उभरते आते हैं। क्या आज हम **वेरा स्लुत्स्काया** की स्मृति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने में चूक सकते हैं जो कि निःस्वार्थ भाव से क्रान्ति की तैयारी में काम करती रही और पेत्रोग्राद के निकट लाल मोर्चे पर कजाकों की गोली से मारी गयी।

क्या हम **येव्गेनिया बॉश** को, उसके आग्नेय मिजाज को भूल सकते हैं, जो हर समय लड़ाई के लिए उत्सुक रहती थी। वह भी क्रान्ति में अपने नियत स्थान पर लड़ती हुई मरी।

क्या हम लेनिन के जीवन और कार्यों से नजदीकी से जुड़े दो नामों -- उनकी दो बहनों और विश्वस्त साथिनों -- **आन्ना इलिनिच्ना येलिजारोवा** और **मारिया इलिनिच्ना उल्यानोवा** का उल्लेख यहां छोड़ सकते हैं?

और मास्को की रेलवे वर्कशापों की **कामरेड वार्या**? हमेशा जीवन्त, हमेशा जल्दी में। और लेनिनग्राद की कपड़ा मजदूर **फयोदोरोवा**, उसके खुशनुमा चेहरे और बैरिकेडों पर लड़ने के समय उसकी निर्भयता को क्या हम भूल सकते हैं?

उन सबके नाम गिनाना असम्भव है। और न जाने कितनी तो अनाम है। अक्टूबर क्रान्ति की नायिकायें एक पूरी सेना के बराबर थीं और नाम भले ही भूल जायें उस क्रान्ति की जीत में और आज सोवियत संघ में औरतों को मिली उपलब्धियों और अधिकारों के रूप में उनकी निस्वार्थता जीवित रहेगी।

यह एक स्पष्ट और निर्विवाद तथ्य है कि औरतों की हिस्सेदारी के बिना अक्टूबर क्रान्ति में लाल झण्डे की विजय नहीं हो सकती थी। अक्टूबर क्रान्ति में लाल झण्डे के नीचे मार्च करने वाली औरतें जिन्दाबाद! औरतों को मुक्ति दिलाने वाली अक्टूबर क्रान्ति जिन्दाबाद! ●

बाल श्रम की बर्बर लूट

(पेज 3 से आगे)

तीसरी दुनिया का पूंजीपति वर्ग साम्राज्यवादियों के छोटे साझीदार की भूमिका स्वीकार कर चुका है। पर मंदी के इस दौर में छोटे-बड़े लुटेरों के बीच भी लूट के माल में हिस्सेदारी के सवाल पर कठिन मोल-तोल तो लगातार चलता रहता है। उन्नत मशीनों के दम पर साम्राज्यवादी सस्ता माल बनाकर छोटे पूंजीपतियों को पूरी दुनिया के बाजार में अपने मुकाबले खड़ा नहीं होने देते और असमान शर्तों पर इन छोटे लुटेरों को अपने साथ साझेदारी के लिए बाध्य करते हैं। फिर भी कालीन, सिले-सिलाये वस्त्र आदि बहुतेरी ऐसी उपभोक्ता सामग्रियां हैं, जिनके उत्पादन में तीसरी दुनिया के पूंजीपति अपने देश में उपलब्ध निम्न जीवन स्तर वाले गरीब मजदूरों, स्त्रियों और बच्चों के बेहद सस्ते श्रम का इस्तेमाल करते हैं और फलतः कम लागत के चलते विश्व बाजार में थोड़ी बहुत जगह बनाने की कोशिश करते रहते हैं। उनकी इस हिमाकत पर बंदिश लगाने के लिए ही साम्राज्यवादी देशों की सरकारों, उनके इशारे पर चलने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और उनके पैसे से "जनकल्याण" के काम करने वाले स्वयंसेवी संगठनों ने सान्ता क्लॉज का चोंगा पहनकर तीसरी दुनिया के पूंजीपतियों को धमकाना शुरू कर दिया है कि यदि वे बाल-मजदूरी को समाप्त नहीं करेंगे तो उनका माल पश्चिम के बाजारों में घुसने नहीं पायेगा। यानी असली झगड़ा बाजार का है जिसे मानवतावाद के रामनामी दुपट्टे से ढंका जा रहा है। इसलिए भारत और तीसरी दुनिया के अन्य कई देशों की सरकारें बाल-मजदूरी के खिलाफ प्रचार करने, कानून बनाने और बाल-मजदूरी पर संभव हद तक नियंत्रण भी स्थापित करने के लिए बाध्य हैं। अब यह कोई मासूम या मूर्ख ही सोच सकता है कि जबतक बच्चों की जिन्दगी की बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं होंगी, तबतक कानून बनाकर और उसे लागू करके (वैसे तो लागू ही नहीं हो सकता) बाल-मजदूरी रोकी जा सकेगी।

और बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। हर पूंजीवादी व्यवस्था को भ्रम पैदा करने के लिए, अपनी असलियत पर पर्दा डालने के लिए और जनअसंतोष के दबाव को कम करते रहने वाले सेफ्टी-वॉल्व के रूप में काम करने के लिए कुछ सुधारवादियों की और कुछ सुधार-कार्यक्रमों की जरूरत पड़ती ही रहती है। साम्राज्यवादियों के पैसे से चलने वाली स्वयंसेवी संस्थाएं और सुधारवादी संगठनों तथा सरकार के सुधार कार्यक्रम यही करते हैं। यूनिसेफ, यूनेस्को, आई.एल.ओ. आदि भी यह काम करते हैं। पूंजीवादी सरकारें भी "कल्याणकारी राज्य" के दायित्वों का अनुपालन करते हुए यही करती है। बाल-मजदूरी विरोधी सुधारवादी चिल्ल-पों के पीछे यह भी एक दूरदृष्टि काम कर रही है। "बचपन बचाओ" का डिटर्जेंट वास्तव में इस पूंजीवादी व्यवस्था के दामन पर लगे बच्चों के खून के धब्बों को रगड़-रगड़ कर धोने का काम कर रहा है। उसका मकसद इस व्यवस्था को नष्ट करने के उद्यम में लगकर वास्तव में बाल-मजदूरी का समूल नाश करना नहीं है, बल्कि इसका दिखावा करके इस व्यवस्था के बारे में भ्रम पैदा करना और जनता को दिग्भ्रमित करना है, उसके चेतना का क्रांतिकारीकरण करने के बजाय उसे भोथरा बनाना है।

बाल मजदूरी के मुद्दे को पूरी आबादी के रोजगार और समान एवं सर्वसुलभ शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लिए संघर्ष से अलग करके देखा ही नहीं जा सकता । जो व्यवस्था सभी हाथों को काम देने के बजाय करोड़ों बेरोजगारों की विशाल फौज में हर रोज इजाफा कर रही है, जिस व्यवस्था में विकास का हर कदम रोजगार के अवसरों को कम करता है और समृद्धि के इर्द-गिर्द फैली दरिद्रता के सागर को और अधिक विस्तार देता हैं, जो व्यवस्था शिक्षा को खरीद-फरोख्त का सामान बना देती है, उसी व्यवस्था के भीतर से लगातार बाल-मजदूरों की अन्तहीन कतारें निकलती रहेंगी। उस व्यवस्था के अनैतिक-अनुचित उपस्थिति पर ही सवाल उठाये बिना बच्चों को बचाना संभव नहीं, बाल मजदूरों की मुक्ति संभव नहीं।

प्रश्न यहां यह नहीं है कि बाल मजदूरों को मुक्त कराने का, बाल मजदूरी विरोधी कानून को प्रभावी बनाने का आंदोलन चलाया जाये या नहीं। अवश्य चलाया जाये, पर इसका परिप्रेक्ष्य यदि क्रांतिकारी नहीं होगा, साम्राज्यवाद-पूंजीवाद विरोधी नहीं होगा, यदि साम्राज्यवाद-पूंजीवाद विरोधी जनता के विभिन्न वर्गों और हिस्सों के संघर्षों से यह आंदोलन जुड़ा नहीं होगा और यदि यह एक समग्र क्रांतिकारी कार्यक्रम का अंग नहीं होगा तो यह महज एक सुधारवादी आंदोलन होगा जो दूरगामी तौर पर व्यवस्था की सेवा करेगा (और कर रहा है)।

(प्रांजल फीचर सेवा)

दस्तावेज

कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढांचा

(1921 में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की तीसरी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत ''कम्युनिस्ट पार्टियों के संगठन पर प्रस्ताव'')

● व्ला०इ०लेनिन

पेरिस कम्यून से लेकर अबतक के वर्ग-संघर्षों के इतिहास की सबसे बुनियादी शिक्षाओं में से एक यह है कि अपनी एक सच्ची क्रांतिकारी पार्टी - एक कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के बिना सर्वहारा वर्ग पूंजीपति वर्ग के विरुद्ध अपनी लड़ाई को फैसलाकुन जीत की मंजिल तक कदापि नहीं पहुंचा सकता और समाजवाद की स्थापना कदापि नहीं कर सकता।

लेनिन ने पहली बार, समग्र रूप में एक क्रांतिकारी सर्वहारा पार्टी के निर्माण एवं गठन तथा स्वरूप एवं प्रकृति से संबंधित सिद्धान्त प्रतिपादित किये। मेंशेविकों और काउत्स्की से लेकर खुश्चेव तक और आज के सी०पी०आई०, सी०पी०एम० तथा सी०पी०आई०(एम०-एल०) (लिबरेशन) जैसे संशोधनवादियों तक - सभी नकली कम्युनिस्ट जो क्रांति के लक्ष्य के साथ विश्वासघात करके महज पूंजीवादी चुनावी राजनीति और अर्थवाद के दलदल में धंस गये, कम्युनिस्ट पार्टी के सांगठनिक सिद्धान्तों को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं या भुला देते हैं। क्रांति से विमुख हो चुके लोगों को भला एक क्रांतिकारी पार्टी की क्या जरूरत? उन्हें लेनिन, स्तालिन और माओ की पार्टियों जैसी पार्टी की नहीं, चवनिया मेंबरी वाली, महज ख़ुली चुनावी पार्टियों की जरूरत होती है। उन्हें मजदूरों की आर्थिक मांगों और राजनीतिक अधिकारों की मांगों के लिए नहीं बल्कि महज ट्रेडयूनियनवाद के लिए ट्रेडयूनियनों की दुकानों की ज़रूरत होती है।

चिन्ता की बात यह है कि देश के विभिन्न हिस्सों में काम करने वाले बहुतेरे क्रांतिकारी कम्युनिस्ट ग्रुप भी आज सांगठनिक सिद्धान्तों और व्यवहार के मामले में बेहद ढिलाई बरत रहे हैं। बोल्शेविक सांगठनिक ढांचा खड़ा करने के बारे में वे गंभीर नहीं दीखते और ढीला-ढाला सामाजिक जनवादी आचरण कर रहे हैं।

एक सही-सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी के पुनर्गठन के लिए सांगठनिक उसूलों पर अडिग रहना बुनियादी विचारधारात्मक महत्व का मुद्दा है। एक सही क्रांतिकारी सांगठनिक ढांचे के बगैर कोई पार्टी सही कार्यक्रम होने पर भी क्रांति को आगे नहीं बढ़ा सकती। आज ज़रूरत है कि वर्ग-सचेत सर्वहारा वर्ग को और कम्युनिस्ट कतारों को बोल्शेविक सांगठनिक उसूलों से एक बार फिर परिचित कराया जाये।

इस उद्देश्य से हम 'बिगुल' के इस अंक से विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन के एक बहुमूल्य दस्तावेज का किश्तों में प्रकाशन शुरू कर रहे है।। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की तीसरी कांग्रेस द्वारा पारित इस दस्तावेज का मसविदा स्वयं लेनिन ने तैयार किया था। इन आम सिद्धान्तों की लोकप्रिय व्याख्या बाद में स्तालिन ने भी अपनी पुस्तक 'लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त' में की। - सम्पादक

(तीसरी किश्त)

III. कम्युनिस्ट क्रियाकलाप के कर्तव्य

पार्टी सदस्य का सर्वोपरि कर्तव्य

8. कम्युनिस्ट पार्टी को क्रान्तिकारी मार्क्सवाद का प्रशिक्षण देने वाली पाठशाला होना चाहिए। संगठन के विभिन्न अंगों और सदस्यों के बीच जैविक (या जीवंत) संबंध पार्टी-गतिविधियों के दैनन्दिन आम कार्यों के जरिये स्थापित होते हैं।

कानूनी हालात के अंतर्गत काम करने वाली कम्युनिस्ट पार्टियों में, आज भी रोजमर्रे के पार्टी-कार्यों में अधिकांश सदस्य नियमित रूप से हिस्सा नहीं लेते। इन पार्टियों की यही सबसे बड़ी कमज़ोरी है जो इनके विकास में लगातार अस्थिरता बने रहने का बुनियादी कारण है।

9. मज़दूर वर्ग की प्रत्येक पार्टी के कम्युनिस्ट रूपान्तरण की पहली मंजिल में उसके सामने यह खतरा मौजूद रहता है कि वह महज एक कम्युनिस्ट कार्यक्रम को स्वीकार करके, अपने प्रचार में पुराने सिद्धान्तों के स्थान पर कम्युनिस्ट शिक्षाओं को शामिल करके और विरोधी शिविर के पदाधिकारियों को हटाकर उनकी जगह कम्युनिस्ट पदाधिकारियों को बहाल करके ही संतुष्ट हो जाये। कम्युनिस्ट कार्यक्रम को मान लेने का मतलब सिर्फ कम्युनिस्ट बनने के इरादे को जाहिर करना है। यदि कम्युनिस्ट क्रियाशीलता का अभाव है और आम सदस्यों की निष्क्रियता बनी रहती है; तो पार्टी कम्युनिस्ट कार्यक्रम को स्वीकार करते समय अपने लिए जो प्रतिज्ञा करती है उसका एक मामूली सा हिस्सा भी पूरा नहीं कर पाती। ऐसा इसलिए कि इस कार्यक्रम को लागू करने की पहली शर्त ही यह है कि पार्टी के निरंतर दैनिक कार्यों में उसके सभी सदस्य भाग लें।

कम्युनिस्ट संगठन की कला इस क्षमता में निहित है कि यह सर्वहारा वर्ग-संघर्ष के लिए प्रत्येक का इस्तेमाल करे, सभी पार्टी-सदस्यों में पार्टी कार्यों का बंटवारा करे तथा अपने सदस्यों के जरिये क्रान्तिकारी आंदोलन की ओर सर्वहारा जन समुदाय के बड़े से बड़े हिस्से को लगातार आकर्षित करे। इसके अतिरिक्त, उसे पूरे आंदोलन की बागडोर अपने हाथों में सिर्फ अपनी शक्ति के बल पर ही नहीं बल्कि अपनी प्रतिष्ठा (अथॉरिटी), ऊर्जा, अपेक्षतया अधिक अनुभव, अपेक्षतया अधिक सर्वतोमुखी जानकारी और क्षमताओं के बल पर बनाये रखना होता है।

10. एक कम्युनिस्ट पार्टी को हर चन्द कोशिश करनी चाहिए कि उसके पास केवल सही मायने में सक्रिय सदस्य रहें तथा उसे प्रत्येक आम पार्टी कार्यकर्ता से यह मांग करनी चाहिए कि वह मौजूद हालात में जहां तक उसके लिए संभव हो, अपनी पूरी ताकत और समय पार्टी को दे और इस तरह की सेवाओं में अपनी सर्वोत्तम शक्तियों को समर्पित कर दे।

स्वाभाविक तौर पर, कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता के लिए कम्युनिस्ट विश्वासों के अतिरिक्त औपचारिक पंजीकरण, पहले एक उम्मीदवार के रूप में और फिर एक पूर्ण सदस्य के रूप में तथा इसके साथ ही निर्धारित शुल्क की नियमित अदायगी, पार्टी पत्र की सदस्यता आदि अनिवार्य शर्तें हैं। लेकिन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है प्रत्येक सदस्य का पार्टी के रोज़मर्रा के कार्यों में हिस्सा लेना।

प्रत्येक सदस्य को किसी न किसी पार्टी इकाई का सदस्य होना चाहिए

11. पार्टी कार्य को सम्पन्न करने के उद्देश्य से प्रत्येक सदस्य को, नियम के तौर पर, किसी छोटे वर्किंग ग्रुप, किसी कमेटी, किसी आयोग, किसी बड़े ग्रुप, फ्रैक्शन या केन्द्रक (न्यूक्लियस) का भी सदस्य होना चाहिए। सिर्फ इसी तरह से पार्टी कार्य का समुचित रूप में बंटवारा हो सकेगा, निर्देशन हो सकेगा तथा उसे पूरा किया जा सकेगा।

निस्संदेह, यह कहने की आवश्यकता नहीं कि स्थानीय संगठन के सदस्यों की आम बैठक में सदस्यों को उपस्थित रहना चाहिए। पार्टी के कानूनी अस्तित्व के हालात में, कानूनी परिस्थितियों में होने वाली इन नियमित आम बैठकों के बजाय स्थानीय प्रतिनिधियों की बैठकों को उनका विकल्प बना देना कतई बुद्धिमानी नहीं होगी। सभी सदस्यों के लिए नियमित रूप से इन बैठकों में मौजूद रहना अनिवार्य होना चाहिए। पर किसी भी हालात में सिर्फ यही काफी नहीं है। इन बैठकों की तैयारियों का मतलब ही है छोटे-छोटे ग्रुपों में काम या इस उद्देश्य के लिए नियुक्त किये गये कामरेडों द्वारा किया गया काम, मज़दूरों की आम सभा, प्रदर्शनों तथा जनकार्रवाइयों की तैयारी तथा प्रभावशाली ढंग से तैयारी के इस अवसर का इस्तेमाल। इन सारी गतिविधियों से जुड़े असंख्य कार्यभारों का ध्यानपूर्वक अध्ययन छोटे-छोटे ग्रुपों में ही हो सकता है और घनीभूत ढंग से ये कार्यभार छोटे-छोटे ग्रुपों द्वारा ही सम्पन्न किये जा सकते है। कार्यकर्ताओं के असंख्य छोटे-छोटे ग्रुपों में बंटी हुई समूची सदस्यता द्वारा इस तरह के लगातार जारी रहने वाले रोज़मर्रा के कार्यों को लगातार चलाये बगैर, सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष में भाग लेने के लिए अत्यन्त परिश्रम से किया गया प्रयास भी हमें केवल इन संघर्षों को प्रभावित करने के कमजोर और निरर्थक प्रयत्नों तक ही ले जायेगा। यह हमें सर्वहारा की महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी शक्तियों को एक एकीकृत प्रभावी कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में संघटित करने के आवश्यक कार्य की ओर नहीं ले जायेगा।

कारखानों में बने पार्टी–सेलों (छोटी कमेटियों) का महत्व

12. सामयिक आंदोलनात्मक कार्रवाई (एजिटेशन), पार्टी-शिक्षा, समाचार-पत्रों के कार्य, साहित्य वितरण, सूचना-सेवाओं और अन्य नियमित पार्टी-सेवाओं आदि पार्टी-गतिविधियों की हर शाखाओं के रोज़मर्रे के कार्यों के लिए पार्टी सेलों का गठन अनिवार्य है।

कारखानों और वर्कशापों में, ट्रेड यूनियनों में, सर्वहारा एसोसियेशनों में, सैनिक इकाइयों आदि में जहां कहीं भी कम्युनिस्ट पार्टी के कम से कम कुछ सदस्य या उम्मीदवार सदस्य हैं, रोज़मर्रे के कम्युनिस्ट कार्यों के निष्पादन के लिए बुनियादी ग्रुप (कर्नेल ग्रुप) कम्युनिस्ट केन्द्रक (न्यूक्लियस) होते हैं। यदि एक ही कारखाने या एक ही यूनियन आदि में पार्टी सदस्यों की संख्या अधिक होती है तो केन्द्रक को एक फ्रैक्शन के रूप में विस्तारित कर दिया जाता है तथा इसके कार्यों का निर्देशन बुनियादी ग्रुपों द्वारा किया जाता है।

यदि एक अधिक व्यापक स्तर पर आम प्रतिपक्षी फ्रैक्शन बनाना या पहले से ही मौजूद ऐसे किसी फ्रैक्शन में भाग लेना आवश्यक हो जाये तो कम्युनिस्टों को उसके अंदर विशेष केन्द्रक (स्पेशल न्यूक्लियस) बनाकर नेतृत्व अपने हाथ में लेने की कोशिश करनी चाहिए।

किसी कम्युनिस्ट केन्द्रक को, जहां तक उसके आसपास के परिवेश का सवाल है, उसमें खुला होकर या यहां तक कि आम जनता के सामने खुले तौर पर काम करना चाहिए या नहीं, यह बात विशेष मामले की विशेष स्थिति पर, ऐसा करने में निहित खतरों और फायदों के गंभीर अध्ययन के नतीज़ों पर निर्भर करेगी।

13. पार्टी के अन्दर आम अनिवार्य कार्यों की व्यवस्था लागू करना और ऐसे छोटे वर्किंग ग्रुपों को संगठित करना कम्युनिस्ट जन-पार्टियों के लिए एक विशेष रूप से कठिन कार्य है। यह काम एक झटके में नहीं किया जा सकता। यह अनथक अध्यवसाय, परिपक्व चिन्तन और अधिक ऊर्जा की मांग करता है।

यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि संगठन के इस नये रूप को प्रारंभ से ही सावधानी के साथ और भली-भांति सोच-विचारकर लागू किया जाये। एक औपचारिक स्कीम के अनुसार प्रत्येक संगठन के सभी सदस्यों को छोटे-छोटे केन्द्रकों और ग्रुपों में बांट देना तथा इन्हें आम दैनिक पार्टी-कार्य करने का आदेश दे देना तो बहुत ही आसान काम होगा। पर इस किस्म की शुरुआत तो कोई शुरुआत न करने से भी बुरी होगी। इससे इन महत्वपूर्ण नये परिवर्तनों के प्रति पार्टी सदस्यों में असंतोष और नाराजगी ही पैदा होगी।

कम्युनिस्ट सेलों का संगठन कैसे किया जाये

उपयुक्त यह होगा कि पार्टी ऐसे अनेक योग्य संगठनकर्ताओं से सलाह ले जो सिद्धान्तों में तर्कपूर्ण आस्था रखने वाले और उनसे प्रेरित कम्युनिस्ट हों तथा जो देश के विभिन्न केन्द्रों के आंदोलनों से पूरी तरह परिचित हों, और तब इन नये परिवर्तनों को (यानी नयी क्रान्तिकारी सांगठनिक ढांचा बनाने विषयक निर्णयों को) लागू करने के लिए एक विस्तृत आधार की रूपरेखा तैयार करे। इसके बाद प्रशिक्षित संगठनकर्ताओं या सांगठनिक कमेटियों को मौके पर सीधे काम सम्हाल लेना चाहिए, ग्रुपों के प्रथम नेताओं का चुनाव कर लेना चाहिए तथा प्राथमिक चरणों का काम शुरू कर देना चाहिए। फिर पार्टी के सभी संगठनों, वर्किंग ग्रुपों, केन्द्रकों और अलग-अलग सदस्यों को ठोस, स्पष्ट रूप में परिभाषित कार्यभार सौंपे जाने चाहिए और इन कार्यभारों को इस तरह प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि तत्काल ही वे उपयोगी, वांछनीय और पूरा करने के काबिल मालूम पड़ें। जहां भी आवश्यक हो उन्हें व्यावहारिक प्रदर्शनों द्वारा बताया जाना चाहिए कि इन कार्यभारों को किसप्रकार पूरा किया जाना है! साथ ही साथ उन्हें उन ग़लत कदमों के बारे में चेतावनी भी दे दी जानी चाहिए जिनसे खासतौर पर बचना हैं

14. पुनर्गठन के इस कार्य को व्यवहार में कदम-ब-कदम पूरा किया जाना चाहिए। शुरू में स्थानीय संगठन में कार्यकर्ताओं के बहुत अधिक केन्द्रक या ग्रुप नही बनाये जाने चाहिए। पहले छोटे मामलों में यह सिद्ध किया जाना चाहिए कि अलग-अलग महत्वपूर्ण कारखानों और ट्रेड-यूनियनों में गठित केन्द्रक सही ढंग से काम कर रहे हैं तथा पार्टी क्रियाशीलता की अन्य प्रमुख शाखाओं में भी कार्यकर्ताओं के जरूरी ग्रुप गठित किये जा चुके हैं और कुछ हद तक उनका सुदृढ़ीकरण भी हो चुका है (मिसाल के तौर पर, सूचना, संचार, नारी आंदोलन, एजिटेशन का विभाग, समाचारपत्र के कार्य, बेरोजगार आन्दोलन आदि में)। इससे पहले कि नया सांगठनिक ढांचा एक सुनिश्चित सीमा तक व्यवहार में आ जाये, संगठन के पुराने ढांचे को बिना सोचे-विचारे नहीं तोड़ना चाहिए।

इसके साथ ही, कम्युनिस्ट संगठन के इस बुनियादी कार्यभार को हर जगह अधिकतम ऊर्जा लगाकर पूरा किया जाना चाहिए। यह न केवल एक कानूनी पार्टी के लिए बल्कि एक गैर कानूनी पार्टी के लिए भी काफी मेहनत का काम है।

जब तक कि सर्वहारा वर्ग-संघर्ष के सभी केन्द्रीय स्थानों पर कम्युनिस्ट केन्द्रकों, फ्रैक्शनों और कार्यकर्ताओं के ग्रुपों का एक व्यापक ताना-बाना (नेटवर्क) काम नहीं करने लग जाता; जबतक कि प्रत्येक पार्टी-सदस्य अपने हिस्से का दैनिक क्रान्तिकारी कार्य पूरा नहीं करने लग जाता और यह उसके लिए स्वाभाविक तथा आदत का हिस्सा नहीं बन जाता, तबतक पार्टी इस कार्यभार को पूरा करने के कठिन श्रमसाध्य मुहिम में चैन से नहीं बैठ सकती।

काम की जांच पड़ताल

15. यह बुनियादी सांगठनिक कार्यभार पार्टी के नेतृत्वकारी निकायों पर पार्टी-कार्य का लगातार निर्देशन करने और उस पर सुनियोजित प्रभाव डालने की जिम्मेदारी डाल देता है। यह पार्टी के संगठनों के नेतृत्व में सक्रिय कामरेडों से बहुविध किस्म के बोझ उठाने की मांग करता है। जो लोग कम्युनिस्ट गतिविधियों के लिए जिम्मेदार बनाये गये हैं उनका काम सिर्फ यही देखना नहीं है कि सभी स्त्री-पुरुष कामरेड सामान्य तौर पर पार्टी कार्यों में लगे हुए हैं, बल्कि उन्हें व्यवस्थित ढंग से और परिस्थिति विशेष में एक आम दिशा की समझ के साथ कार्य विशेष की अपनी व्यावहारिक जानकारी के आधार पर उन कामरेडों की सहायता करनी चाहिए और ऐसे कामों का निर्देशन करना चाहिए। अपने अर्जित अनुभवों के आधार पर उन्हें स्वयं अपने कामों के दौरान हुई ग़लतियों को ढूंढ़ निकालने की कोशिश करनी चाहिए, काम के तरीकों में लगातार सुधार करना चाहिए और एक क्षण के लिए भी संघर्ष के उद्देश्यों को आंखों से ओझल नहीं करना चाहिए।

ऊपर से नीचे तक रिपोर्टिंग – नेतृत्व की एक मुख्य जिम्मेदारी

16. हमारे समूचे पार्टी कार्य का दायित्व या तो सैद्धान्तिक अथवा व्यावहारिक धरातलों पर प्रत्यक्ष संघर्ष या फिर इस संघर्ष की तैयारी है। अभी तक इस काम में विशेष दक्षता हासिल करने के मामले में बहुतेरी खामियां रही हैं। काम के कई ऐसे पर्याप्त महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं, जिनमें पार्टी गतिविधियां सिर्फ कभी-कभी संचालित होती हैं। मिसाल के तौर पर, कानूनी स्थितियों में काम करने वाली पार्टियों ने खुफिया पुलिस के आदमियों का मुकाबला करने के क्षेत्र में नहीं के बराबर काम किया है। पार्टी कामरेडों की शिक्षा का काम आम तौर पर एक दूसरे दर्जे के काम

(पेज 8 पर जारी)

डाक-तार हड़ताल के सबक

आर्थिक–राजनीतिक लड़ाई को क्रान्तिकारी संघर्ष की एक कड़ी बनाओ!!

(पेज 1 से आगे)

गौरतलब बात है कि इस बेहद वाजिब मांग को लेकर भी ट्रेड यूनियनों का नेतृत्व जुझारू और लम्बे आंदोलन की राह पर उतरने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं था और चाहता था (और उम्मीद भी करता था) कि धमकियों-चेतावनियों-वार्ताओं आदि से ही बात बन जाये। पर समय बहुत कम था और कर्मचारियों में खुले सरकारी अन्याय और भेदभाव की साजिश के प्रति गुस्सा बहुत अधिक था। स्थिति यह थी कि जगह-जगह कर्मचारी इंतजार के लिए एकदम तैयार नहीं थे और स्वतः स्फूर्त ढंग से आंदोलन छिड़ जाने का माहौल बन रहा था। यह स्थिति देखकर सभी यूनियनों द्वारा अफरातफरी में और बिना किसी तैयारी के हड़ताल का आह्वान किया गया। फिर भी प्रदर्शन अप्रत्याशित रूप से प्रभावी रहा। अधिकतर क्षेत्रों में हड़ताल की नोटिस तक नहीं पहुंची थी फिर भी मजदूर और कर्मचारी अखबारों और अन्य प्रचार माध्यमों से हड़ताल के निर्णय की खबर मात्र जानकर हड़ताल पर चले गये। देखते-देखते पूरे देश की संचार-व्यवस्था पंगु हो गई।

इस स्थिति ने स्पष्ट कर दिया कि इतनी स्पष्ट न्यायसंगत और सामान्य सी मांग पर भी लड़ने के लिए आज ट्रेड यूनियन आंदोलन का शीर्ष नेतृत्व तैयार नहीं है। यह कमजोरी और अवसरवाद की आखिरी सीमा है। पर यह भी साफ है कि यह संघर्ष ट्रेड यूनियन मठाधीशों के नियंत्रण और इच्छा से एक हद तक स्वतंत्र हो गया था और कर्मचारियों ने यह गुंजाइश ही नहीं छोड़ी थी कि उनके हितों की कीमत पर नेतागण सरकार से कोई सौदेबाजी कर सकें। आने वाले दिनों में उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों के चौतरफा अमल से अन्य क्षेत्रों की तरह डाक-तार विभाग में भी आधुनिकीकरण-कम्प्यूटरीकरण के नाम पर किसी न किसी रूप में छंटनी, नौकरियों की संख्या घटाने, वेतन-जाम आदि के साथ-साथ किश्तो में निजीकरण की जिस साजिश को अमली जामा पहनाया जाना है तथा पूरे देश में बढ़ती महंगाई-बेरोजगारी और घटती बुनियादी सुविधाओं का जो कहर पूरी जनता के साथ डाक-तार कर्मियों के परिवारों पर भी बरपा होने वाला है; उसके खिलाफ डाक-तार विभाग के मेहनतकश और कर्मचारी भी मैदान में उतरने के लिए मजबूर होंगे। इस संघर्ष की धार को कुंद करने और सौदेबाजी करने की कोशिश करने वाले ट्रेड यूनियन नेताओं की कुलीन नौकरशाह जमात को तब कर्मचारी वर्ग संघर्ष की अगली कतारों से धक्के मारकर बाहर कर देगा, यह इस हड़ताल ने स्पष्ट कर दिया है।

लेकिन महज इतने से ही ट्रेड यूनियन आंदोलन का क्रान्तिकारीकरण नहीं हो जायेगा। पूंजीवादी और नकली वामपंथी चुनावी पार्टियों से जुड़े ट्रेड यूनियन नेताओं के कुलीन तबके को किनारे लगाना ही सब कुछ नहीं है। कोई भी लड़ाई स्वतःस्फूर्त ढंग से लड़कर नहीं जीती जा सकती। स्वतःस्फूर्त संघर्ष कहीं नहीं ले जाता। या तो वह बिखर जाता है या ज्यादा से ज्यादा यह होता है कि जिस अर्थवादी नेतृत्व का चेहरा नंगा हो चुका होता है उसका स्थान कालांतर में एक जुझारू दिखावटी तेवर वाला नया अर्थवादी नेतृत्व ले लेता है। अतः जरूरी है कि नेताओं की असलियत को जानने के बाद मज़दूर वर्ग ट्रेड यूनियनों से ही विरक्त होकर अराजक या स्वतःस्फूर्त संघर्ष की राह न पकड़े या आनन-फानन में स्थापित पुराने ट्रेड यूनियन संगठनों से अलग होकर मजदूरों का कोई हिस्सा अलग ट्रेड यूनियन न गठित करे। यह पहले से ही कमजोर और गैरक्रान्तिकारी ट्रेड यूनियन आंदोलन को अधिक कमजोर और गैर क्रान्तिकारी बनायेगा तथा प्रकारान्तर से अलग-अलग ट्रेड यूनियनों की दुकानदारी चलाने वाली पूंजीवादी चुनावी पार्टियों के कुचक्र को ही मदद पहुंचायेगा।

जरूरी यह है कि आने वाले कठिन दिनों की कठिन लड़ाइयों में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए 1. देश के सभी क्षेत्रों में काम करने वाले मेहनतकशों के साथ ही डाक-तार विभाग के मज़दूर और कर्मचारी भी अपने ट्रेड यूनियन आंदोलन को एकजुट और एकताबद्ध करें, 2. वे सही जनतांत्रिक ढंग से काम करने वाले सशक्त और प्रभावी ट्रेड यूनियन संगठन खड़ा करे जिसमें नेतृत्व वास्तव में कतारों का प्रतिनिधित्व करता हो, 3. डाकतार विभाग के ट्रेड यूनियन संगठनों को भी आर्थिक मांगों के साथ-साथ समस्त राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना होगा तथा 4. ट्रेड यूनियन संगठनों का क्रान्तिकारीकरण किया जाये, यानी कि इनका नेतृत्व पूंजी के हितों की सुरक्षा करने और पूंजीवादी व्यवस्था के लिए सेफ्टीवाल्व का काम करने की जगह लगातार डाक-तार कर्मियों को यह याद दिलाये कि वे भी पूरे देश और पूरी दुनिया के मेहनतकश अवाम के हिस्से हैं और उनकी नियति और अंतिम मुक्ति का प्रश्न उनसे जुड़ा हुआ है। वह कतारों को महज बोनस और वेतनवृद्धि के संघर्षों से आगे बढ़कर राजनीतिक संघर्ष में कूदने के दायित्व और सर्वहारा वर्ग के पूंजीवाद विरोधी ऐतिहासिक मिशन की लगातार याद दिलाये तथा इसके लिए उन्हें तैयार करे।

विगत हड़ताल के ही हवाले से हम डाक-तार संचार क्षेत्र के मेहनतकशों को उनकी ताकत और फैसलाकुन हैसियत का अहसास कराना चाहते हैं। सात दिनों तक संचार व्यवस्था पंगु हो जाने के कुछ जरूरी मतलब हैं। रेल, अन्य यातायात साधनों और ऊर्जा क्षेत्र की ही तरह संचार तंत्र भी पूंजीवादी आर्थिक-सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण अवरचनागत (इन्फ्रास्ट्रक्चरल) क्षेत्र है। यदि इन क्षेत्रों में काम करने वाले मेहनतकश एकजुट हो जायें तो पूरी पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था, बाजार तंत्र और राज्य मशीनरी को लकवा मार जायेगा। इस एकजुटता के साथ ही यदि बुनियादी और अन्य संगठित उद्योगों के मज़दूरों की शक्ति भी जुट जाये और गांव के गरीबों का एक बड़ा हिस्सा भी खड़ा हो जाये तो राज्यसत्ता का दमनतंत्र उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। यही कारण है कि पूंजीपति वर्ग, राजनीतिक चाकरों और उसी की सेवा में जुटे ट्रेड यूनियन नौकरशाहों ने मज़दूर वर्ग को न केवल खण्ड-खण्ड में बांट दिया है बल्कि महज आर्थिक मांगों की लड़ाइयों तक ही महदूद करके उनकी राजनीतिक चेतना की धार को एकदम कुंद कर दिया है। यह शासक वर्गों की एक बहुत बड़ी सेवा है।

आने वाले दिनों में निजीकरण और उदारीकरण की नीतियों की जिस मार का सामना देश के सभी मेहनतकशों के साथ ही डाक-तार कर्मचारियों को और उनके परिवारों को भी करना है, उसका मुकाबला केवल एक निर्णायक संघर्ष के द्वारा ही किया जा सकता है और यह संघर्ष महज आर्थिक मांगों का नहीं बल्कि एक राजनीतिक संघर्ष होगा। ऐसा इसलिए कि वर्तमान आर्थिक नीतियां पूरे विश्व पूंजीवाद के असाध्य ढांचागत संकट की देन हैं और शासक वर्गों का एकमात्र विकल्प हैं। वे इन्हें चाहकर भी उलट नहीं सकते। अब आने वाले दिनों में, आम जनता अपनी ज़िन्दगी की बढ़ती परेशानियों-बदहालियों को खतम करने के लिए जो लड़ाई लड़ने को बाध्य होगी वह लड़ाई इस व्यवस्था की चौहद्दी को तोड़ने वाली लड़ाई होगी। वह उत्पादन, राजकाज और समाज के पूरे पूंजीवादी ढांचे को बदलकर एक नये ढांचे के निर्माण की लड़ाई होगी जिस पर पूरी तरह आम मेहनतकशों का नियंत्रण होगा।

इस ऐतिहासिक फैसलाकुन जंग में आधारभूत और अवरचनागत संगठित उद्योगों के मेहनतकशों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होगी। उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बिना पूंजीवादी निजाम के खिलाफ आम बग़ावत हो ही नहीं सकती। मात्र सात दिनों की छोटी सी हड़ताल में पूरे देश की संचार व्यवस्था को लगभग ठप्प कर देने वाले डाक-तार कर्मचारियों को भी अपनी शक्ति और अपनी ऐतिहासिक भूमिका का अहसास करना होगा।

हम यह याद दिलाना जरूरी समझते हैं कि सात दिनों की इस छोटी पर प्रभावी देशव्यापी हड़ताल से बदहवास इस देश की सरकार ने इस दौरान व्यवस्था की साख बनाये रखने के लिए इस दौरान क्या-क्या किया और किस तरह पूंजीपतियों को नाजायज रियायतें देने का सिलसिला लगातार जारी रखा। भंयकर औद्योगिक मंदी और वित्त बाजार की गिरावट पर काबू पाने के लिए, इस दौरान भारतीय रिजर्व बैंक ने व्यापारिक बैंकों का कैश क्रेडिट अनुपात 12 प्रतिशत से 10 प्रतिशत करके करीब दस हजार करोड रुपये पूंजीपतियों को कम ब्याज पर देने का नया नियम लागू किया। इसी दौरान सार्वजनिक क्षेत्रों के चालीस उद्यमों के शेयरों को निजी पूंजीपतियों को बेंचने का निर्णय लिया गया। अवरचनागत उद्यमों में संयुक्त क्षेत्र की मंजूरी दी गई। पूंजीपतियों को इतना लाभ देकर सरकार ने उनका विश्वास और समर्थन हासिल किया और तब जाकर हड़ताली कर्मचारियों की बेहद न्यायसंगत छोटी सी मांग को स्वीकार किया गया। इस स्थिति पर गहराई से सोचने की जरूरत है। यह बताता है कि बोनस-भत्ते की लड़ाई भी अब इस व्यवस्था के सीमान्त के निकट लड़ी जा रही है और अब स्थिति यह आने वाली है कि छोटी से छोटी मांग को लेकर शुरू हुआ संघर्ष भी इस व्यवस्था की सीमा रेखा पर लड़ा जाने वाला संघर्ष बन जायेगा।

इसलिए हम डाक-तार विभाग के कर्मचारियों को याद दिलाना चाहते हैं कि वे इस बात को समझें कि वे भी इतिहास के सर्वाधिक क्रान्तिकारी वर्ग के या तो हिस्से हैं या उससे बेहद नज़दीकी रूप से जुड़े हुए हैं। वे याद करें कि मज़दूर वर्ग का ऐतिहासिक मिशन क्या हैं। वे इस बात को समझें कि वे एक ऐसे क्षेत्र में काम करते हैं, जहां से इस पूरी व्यवस्था को पंगु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है। यह है उनकी ताकत। मगर इसके अहसास के लिए क्रान्तिकारी चेतना से लैस होना जरूरी है।

यह भी एक ऐतिहासिक संयोग है कि मौजूदा हड़ताल एक ऐसे क्रान्तिकारी जन-उभार की पचासवीं वर्षगांठ के समय हुई जिसमें अन्य मजदूरों, किसानों और नौसैनिकों के साथ ही डाक-तार कर्मचारियों ने भी ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी। याद कीजिए 1946 का वह गौरवशाली वर्ष जब बम्बई में रॉयल नेवी ने नौसैनिकों ने विद्रोह कर दिया था और उनके समर्थन में गोदी कर्मचारी और फिर पूरे बंबई के मजदूर हड़ताल पर चले गये थे। नाविक विद्रोह के ठीक चार दिन बाद 29 जुलाई को डाक-तार कर्मचारी भी हड़ताल पर चले गये थे। और फिर जल्दी ही पूरे देश में संगठित-असंगठित क्षेत्र के सर्वहाराओं के अनवरत हड़तालों-प्रदर्शनों का सिलसिला शुरू हो गया था। किसान भी पीछे नहीं थे। गौरवशाली तेलंगाना किसान संघर्ष इसी वर्ष उग्र और मुखर रूप में शुरू हो चुका था। उधर बंगाल में किसानों का तेभागा आंदोलन और त्रावणकोर-कोचीन में पुनप्रा-वायलार का किसान संघर्ष भी शुरू हो चुका था। इसी व्यापक जनउभार के चलते अंग्रेजों ने अपना बोरिया-बिस्तर तत्काल बांधने का निर्णय लिया। हालांकि कम्युनिस्ट नेतृत्व की कमजोरियों-गलतियों के कारण सत्ता जनता के हाथों में नहीं आई, लेकिन उपनिवेशवाद का खात्मा भी उन व्यापक जनसंघर्षों के चलते ही संभव हो सका।

अब साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के खात्मे का सवाल इतिहास के एजेण्डे पर है और यहां भी क्रान्तिकारी जनसंघर्ष में डाक-तार कर्मचारियों की एक अहम भूमिका हो सकती है। होनी ही चाहिए। यह अनिवार्य भी है। 1946 की पचासवीं वर्षगांठ का यही संदेश है। 1996 की इस देशव्यापी हड़ताल की भी यही मुख्य शिक्षा है।

● ओ.पी. सिन्हा

कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढांचा

(पेज 7 से आगे)

की तरह सिर्फ कभी-कभी किया जाता है और वह भी इतने सतही तौर से कि सदस्यों के बहुत बड़े भाग को पार्टी के अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रस्तावों में से अधिकांश की, यहांतक कि पार्टी कार्यक्रम और कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के प्रस्तावों तक की जानकारी नहीं है। पार्टी संगठनों की एक पूरी व्यवस्था के द्वारा पार्टी की सभी कार्यकारी कमेटियों के अंदर शिक्षा का काम नियमित रूप से और लगातार जारी रहना चाहिए। तभी जाकर लगातार उच्चतर स्तर की विशेष दक्षता हासिल की जा सकती है।

17. कम्युनिस्ट क्रियाशीलता के कर्तव्यों में कामों की रिपोर्टें देना भी शामिल है। यह पार्टी के सभी संगठनों और सभी अंगों का तथा साथ ही प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य है। छोटी-छोटी समयावधियों की आम रिपोर्टें होनी चाहिए। पार्टी की विशेष कमेटियों के कामों की विशेष रिपोर्टें होनी चाहिए। यह आवश्यक है कि रिपोर्टिंग के काम को इस तरह व्यवस्थित कर दिया जाये कि यह कम्युनिस्ट आंदोलन की सर्वश्रेष्ठ परम्परा के रूप में एक स्थापित कार्यविधि बन जाये।

प्रत्येक संगठन अपनी नेतृत्वकारी कमेटियों को रिपोर्ट देता है।

18. पार्टी को अपनी तिमाही रिपोर्ट कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के नेतृत्वकारी निकाय को देनी होती है। पार्टी के प्रत्येक संगठन को अपनी रिपोर्ट अपने ठीक ऊपर की नेतृत्वकारी कमेटी को देनी होती है (उदाहरण के तौर पर, स्थानीय शाखाओं की मासिक रिपोर्टें उनसे सम्बन्धित पार्टी कमेटी को)।

प्रत्येक केन्द्रक, फ्रैक्शन या कार्यकर्ताओं के ग्रुप को उस पार्टी निकाय को अपनी रिपोर्ट भेजनी होती है, जिसके नेतृत्व के अन्तर्गत उसे रखा गया है। अलग-अलग सदस्य अपनी रिपोर्ट उस केन्द्रक या कार्यकर्ताओं के ग्रुप को (यानी उसके नेता को) देते हैं जिसके वे सदस्य हैं। किसी विशेष रूप से सौंपी गयी जिम्मेदारी को पूरा करने पर वे उस पार्टी निकाय को रिपोर्ट करते हैं जिसके द्वारा उक्त काम का आदेश दिया गया हो।

रिपोर्ट, जितना शीघ्र हो सके, देनी चाहिए। वह भरसक जुबानी होनी चाहिए जबतक कि पार्टी कमेटी या व्यक्ति, जिसने आदेश दिये हों, लिखित रिपोर्ट न मांगे। रिपोर्ट संक्षिप्त और निर्दिष्ट कार्य पर केन्द्रित होनी चाहिए। रिपोर्ट पाने वाले व्यक्ति की यह जिम्मेदारी है कि उन रिपोर्टों को जो प्रकाशित न की जा सकती हों सुरक्षित रखा जाये तथा महत्वपूर्ण रिपोर्टें अविलम्ब सम्बन्धित नेतृत्वकारी पार्टी कमेटियों को प्रेषित कर दी जायें।

रिपोर्टें कैसी हों

19. ये सभी रिपोर्टें, स्वाभाविक तौर पर, सिर्फ रिपोर्ट भेजने वाले के अपने द्वारा किये गये कार्यों के विवरण तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। इन रिपोर्टों में उन परिस्थितियों के बारे में भी सूचना होनी चाहिए जिनकी जानकारी काम के दौरान होती है और जिनका हमारे संघर्ष के लिए कुछ महत्व होता है, विशेषकर ऐसी जानकारियां जिनके आधार पर हमारे भविष्य के कामों में परिवर्तन या सुधार किये जा सकते हों। इन रिपोर्टों में काम के सुधार के उन सुझावों को भी शामिल कर देना चाहिए जिनकी काम के दौरान जरूरत महसूस हुई हो।

कम्युनिस्ट पार्टी के सभी केन्द्रकों, फ्रैक्शनों और कार्यकर्ताओं के ग्रुपों में, उन सारी रिपोर्टों पर जो उनके भीतर प्रस्तुत की गई हों या जो उनके द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली हों; विस्तृत बहस होनी चाहिए। ऐसी बहसें एक नियमित आदत बना ली जानी चाहिए।

केन्द्रकों और कार्यकर्ताओं के ग्रुपों में यह सावधानी बरती जानी चाहिए कि विरोधी संगठनों, खासतौर पर निम्न पूंजीवादी मजदूर संगठनों और मुख्य तौर पर समाजवादी पार्टियों के संगठनों पर ध्यान रखने और उनकी रिपोर्ट देने के लिए जिम्मेदार अलग-अलग पार्टी-सदस्यों या सदस्यों के समूहों को नियमित रूप से बदल दिया जाये (यानी ये जिम्मेदारियां बदल-बदलकर सौंपी जायें)।

(अगले अंकों में जारी)

लेनिन की कविता

(यह कवितांश लेनिन की जिस लम्बी कविता से लिया है, वह संभवत: उनकी एकमात्र काव्य रचना है। यह कविता उन्होंने 1905-07 की रूसी क्रान्ति के कुचल दिये जाने के बाद के काले अंधकारमय दिनों में लिखी थी। यह कविता सर्वहारा की उस वैज्ञानिक दृष्टि को मूर्त करती है जो पराजय के सबसे कठिन दिनों में भी समाजवाद के अंतिम विजय के प्रति अविचल विश्वास बनाये रखती है। अक्टूबर क्रान्ति की 79वीं वर्षगांठ के अवसर पर हम यहां लेनिन की कविता का जो हिस्सा छाप रहे है, वह आज के कठिन समय के इतना अनुकूल लगता है जैसे कि आज के लिए ही लिखा गया हो।) – संपादक

....पैरों से रौंदे गये आजादी के फूल
आज नष्ट हो गये हैं
अंधेरे के स्वामी
रोशनी की दुनिया का ख़ौफ देख
ख़ुश हैं
मगर उस फूल के फल ने
पनाह ली है जन्म देने वाली मिट्टी में,
मां के गर्भ में,
आंखों से ओझल गहरे रहस्य में
विचित्र उस कण ने अपने को जिला रखा है
मिट्टी उसे ताकत देगी, मिट्टी उसे गर्मी देगी
उगेगा वह एक नया जन्म लेकर
एक नई आजादी का बीज वह लायेगा
फाड़ डालेगा बर्फ की चादर वह विशाल वृक्ष
लाल पत्तों को फैलाकर वह उठेगा
दुनिया को रौशन करेगा
सारी दुनिया को, जनता को
अपनी छांह में इकट्ठा करेगा।

लेनिन

(कविता का एक अंश)

● सुकांत भट्टाचार्य

लेनिन की अगुआई में, जल प्लावन ने रूस में
तोड़ दिया है बांध, जुल्म और अन्याय का।

धरती पर अन्याय का, जो बांध था
तोड़ डाला, टुकड़े-टुकड़े कर दिया, उसको लेनिन ने
दमन, शोषण के ख़िलाफ, विरो ध की आवाज उठाई लेनिन ने
मौत का सागर नहीं अब, अब हवाओं में फहराता है झंडा बुलंद।
मुक्ति के तट हैं बहुत करीब, हवाएं झूला झुलातीं घास को।

आज है लेनिन रक्त में मेरे
और दुर्बलता मुझे छू नहीं सकती
विद्रोह हिलोरें ले रहा है मेरे हृदय में
लगता है जैसे
आज मैं ख़ुद ही लेनिन हूं।

अक्टूबर क्रान्ति की 79वीं वर्षगांठ के अवसर पर

7 नवम्बर : जीतों के दिन की शान में गीत

● पाब्लो नेरुदा

(1941 में लिखी गई लम्बी कविता का एक अंश)

इस मुबारक दिन तुम्हें शुभकामनाएं देता हूं सोवियत संघ,
विनम्रता के साथ। मैं एक लेखक और कवि हूं।
मेरे पिता रेल मजदूर थे। हम हमेशा गरीब रहे।
कल मैं तुम्हारे साथ था, बहुत दूर भारी बारिशों वाले अपने
छोटे से देश में। वहां तुम्हारा नाम लोगों के दिलों में जलते-जलते
सुर्ख़ हो गया
जब तक वह मेरे देश के ऊंचे आकाश को छूने नहीं लगा।

आज मैं उन्हें याद करता हूं, वे सब तुम्हारे साथ हैं।
फैक्ट्री दर फैक्ट्री, घर दर घर,
तुम्हारा नाम उड़ता है लाल चिड़िया की तरह।
तुम्हारे वीर यशस्वी हों, और तुम्हारे ख़ून की
हरेक बूंद। यशस्वी हो हृदयों की बह-बह निकलती बाढ़
जो तुम्हारे पवित्र और गौरवपूर्ण आवास की रक्षा करते हैं।

यशस्वी हो वह बहादुरी भरी और कड़ी रोटी,
जो तुम्हारा पोषण करती है जबकि वक्त के द्वार खुलते हैं।

ताकि जनता और लोहे की तुम्हारी फौज गाते हुए राख और
उजाड़ मैदानों के बीच से
हत्यारों के ख़िलाफ कर सके मार्च ताकि
चांद जितना विशाल एक गुलाब
रोप सके जीत की सुंदर और पवित्र भूमि पर।

पाब्लो नेरुदा के बारे में

पाब्लो नेरुदा 1904 में चिली में पैदा हुए। उनकी कविताएं न सिर्फ चिली की बल्कि साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्षरत पूरी लातिन अमेरिकी जनता की अमूल्य विरासत और संघर्ष का एक हथियार है। लातिन अमेरिका में उनका वही दर्जा है जो तुर्की में नाज़िम हिकमत का स्पेन में लोर्का का। उनकी कविताएं सोवियत क्रान्ति, स्पेन में जनता और इंटरनेशनल ब्रिगेड के फासीवाद-विरोधी संघर्ष, सोवियत संघ द्वारा नात्सियों के मानमर्दन और चिली तथा अन्य लातिन अमेरिकी देशों में तानाशाही और दमन के विरुद्ध जनता के दुर्द्धर्ष संघर्षों की साक्षी और भागीदार कविताएं है। उनकी कविताएं शिक्षित करती हैं, आह्वान करती है, ऐक्यबद्ध करती हैं, संगठित करती हैं, संघर्ष करती है, भर्त्सना करती है और अंतिम जीत की राह दिखाती है। जीवन, संघर्ष और सृजन का यह कवि लातिनी जनता के दिलों में आज अपनी मृत्यु के 26 वर्षों बाद भी जीवित है और साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरणा देता रहता है। तानाशाह धमकियों और नजरबन्दियों द्वारा जीवित रहते नेरुदा को चुप नही करा सके और मरने के बाद उसके घर को गिरा देने और उसकी किताबों पर प्रतिबंध लगा देने के बावजूद उसकी कविताओं को जनता से अलग नही कर सके। आज भी, बदस्तूर, वे नेरुदा की कविताओं से डरते है।

अक्टूबर क्रान्ति की उनहत्तरवीं वर्षगांठ पर

बोल्शेविकों ने सत्ता पर कब्जा कैसे किया?

बोल्शेविकों ने जनता को जीता

अक्टूबर 1917[1] में रूसी सर्वहारा हथियार लेकर उठ खड़ा हुआ। उसने अपने उत्पीड़कों को धूल चटा दी और पूंजीवादी राज्य को उखाड़ फेंका। इसी सर्वहारा ने अपने हरावल कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के नेतृत्व में साढ़े तीन वर्ष लम्बे विकट गृहयुद्ध में आगे बढ़कर हिस्सेदारी की और जीत हासिल की। उसने न केवल देश के भीतर सिर उठाने वाली प्रतिक्रियावादी सशस्त्र ताकतों को पराजित और ध्वस्त किया वरन् अमेरिका समेत चौदह अलग-अलग साम्राज्यवादी शक्तियों की आक्रमणकारी सेनाओं को भी मार भगाया। उसने दुनिया के छठवें भूभाग पर दुनिया के प्रथम समाजवादी राज्य -- सोवियत समाजवादी गणतांत्रिक संघ की स्थापना की। विजयोपरान्त लगभग चालीस युगसदृश वर्षों तक रूसी सर्वहारा ने अपने राज्य का उपयोग दुनिया भर में क्रान्तियों का समर्थन करने और गरीबी, अपमान, युद्ध, शोषकों एवं शोषितों तथा उत्पीड़कों एवं उत्पीड़ितों में मानवता के बंटवारे से मुक्त कम्युनिस्ट दुनिया की ओर पहले कदम के रूप में भूतपूर्व रूसी साम्राज्य में समाजवादी समाज का निर्माण करने में किया।

ऐसा नहीं था कि यह आम बगावत अचानक भड़क उठी थी। 1914 में रूस जर्मनी के खिलाफ इंग्लैण्ड और ंस की ओर से प्रथम विश्व युद्ध में शामिल हुआ। यह एक प्रतिक्रियावादी युद्ध था, दोनों ओर से एक साम्राज्यवादी युद्ध, रूसी शास वर्ग शीघ्र विजय की उम्मीद कर रहा था और बहुतेरे लोग उनके इस क्रूरतापूर्ण बहकावे के असर में आ चुके थे। सेनाओं का मार्च शुरू होते समय हौसले बुलन्द थे और कुछ ही सालों पहले उठा क्रान्तिकारी ज्वार मंद पड़ गया था।

लेकिन शीघ्र विजय के बजाय युद्ध कत्लेआम, अकाल और सैन्य गतिरोध की सौगात लेकर आया। 1916 के अन्त तक पहुंचते-पहुंचते युद्ध को संचालित करने के मसले पर रूसी शासक वर्ग के अन्दर दरारें पड़ने लगीं जबकि, सर्वहारा ने पेत्रोग्राद और मास्को (रूस के सबसे बड़े और सर्वाधिक औद्योगीकृत शहर) में विद्रोह के पहले संकेत दिये।

फरवरी 1917 में यह जनअसंतोष शासक वर्ग के अन्दर से पैदा हुई दरारों से फूट पड़ा। पेत्रोग्राद में भूख के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे लोग पुलिस से उलझ पड़े और देखते ही देखते यह संघर्ष सशस्त्र टकरावों के रूप में शहर के ज्यादातर हिस्सों में फैल गया। रूसी शासक वर्ग के मुख्य धड़े ने ब्रितानी और फ्रांसीसी शासकों के साथ सांठ-गांठ कर और अधिक जबर्दस्त उभार को रोकने के लिए हताशापूर्वक हाथ-पैर मारे। इसी समय एक अचम्भित करने वाली घटना यह हुई कि वे रूसी जार को हटाने पर सहमत हो गये। सैकड़ों सालों तक सम्राट के रूप में रूस पर शासन. करने वाले जारों की हुकूमत चंद दिनों में ही धराशायी हो गयी और उसका स्थान एक अस्थायी सरकार ने ले लिया।

जार को सत्ताच्युत करने के बाद शासक वर्ग के उसके विरोधियों ने जल्दी-जल्दी हालात को अपने काबू में करने और युद्ध में पुनः अपनी स्थिति मजबूत बनाने की कोशिश की। लेकिन एक बार जनता का विद्रोह फूट पड़ने के बाद शासकों के लिए उसे दबाना नाकों चने चबाना साबित हुआ। लोग निश्चित उद्देश्यों के लिए सड़कों पर उतरे थे। वे युद्ध से थक चुके थे, भूख से बेहाल थे और वे इन दोनों समस्याओं का कुछ न कुछ वारा-न्यारा करने की ठान चुके थे।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि उन्होंने सत्ता की भ्रूणरूपी संस्थाओं -- सोवियतों या कारखानों, सेना की कई रेजिमेण्टों और बाद में देहाती इलाकों में भी विभिन्न परिषदों को विकसित कर लिया था। इन सोवियतों के जरिये जनसमुदाय ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों -- सेना में अफसरों के चयन से लेकर कारखानों में अनुशासन स्थापित करने तक -- में कुछ हद तक नियंत्रण की मांग की। लेनिन ने इस परिस्थिति का विश्लेषण दोहरी सत्ता के रूप में किया -- पुरानी राज्य सत्ता के अस्तित्व के साथ-साथ एक नयी सर्वहारा सत्ता के इन बेहद कमजोर भ्रूणों की मौजूदगी। लेनिन ने कहा कि यह दोहरी सत्ता बहुत अधिक समय तक न तो टिकी रह सकती है और न ही टिकेगी -- एक पक्ष की दूसरे पर जीत होनी अवश्यम्भावी है।

इस बीच, युद्ध जिसने संकट को जन्म दिया था और तेज हो गया। अलेक्सांद्र करेन्स्की के नेतृत्व वाली नयी अस्थायी सरकार ने इंग्लैण्ड .और फ्रांस के साथ अपने सैन्य गठबंधन को जारी रखने की बात दुहराई। बोल्शेविकों को छोड़कर मजदूरों और गरीबों के बीच अपना प्रभाव रखने वाली अन्य प्रमुख पार्टियों -- मेन्शेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों[2] ने करेन्स्की की नीति का समर्थन किया।

लेनिन के नेतृत्व में अकेले बोल्शेविकों ने दूसरी क्रान्ति की हिमायत की। उनका कहना था कि जार को उखाड़ फेंकने (पहली क्रान्ति) के बाद अब सर्वहारा समाजवादी क्रान्ति की दिशा में बढ़ने का समय आ गया है। लेकिन फरवरी क्रान्ति के तुरन्त बाद मेन्शेविकों ने अधिकांश लोगों को बरगलाना शुरू कर दिया था। उन्होंने उन लाखों लोगों, जो पहली बार राजनीतिक मंच पर सक्रिय हो रहे थे, की भलमनसाहत और नेक भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया और उन्होंने मध्यवर्ग और किसान समुदाय के प्रभाव में आकर तथा सरकार और पुराने समय के शासकों के समर्थन से अपनी कार्रवाइयां संचालित कीं। इसके विपरीत बोल्शेविकों ने चट्टानी दृढ़ता वाले सर्वहाराओं को अपना आधार बनाया। इसके साथ ही उन्हें सेना के आम सिपाहियों का भी पर्याप्त समर्थन हासिल था। लेकिन अभी उन्हें एक दूसरी क्रान्ति की जरूरत को पूरा करने के लिए अपने ही आधारों को जीतना था, और अधिक व्यापक जनता तक अपनी पहुंच बनानी थी और क्रान्ति को सम्भव बनाने के लिए आम तौर पर परिस्थितियों का तेजी से निर्माण करना था।

(पेज 2 पर जारी)

शासक वर्ग और उसके दो कौड़ी के भाड़े के विचारक जनता को निरन्तर यह नसीहत देते रहते हैं कि सशस्त्र क्रान्ति असम्भव है। वे कहते हैं कि व्यवस्था इतनी सशक्त है कि उत्पीड़ित जनों द्वारा उसे उखाड़ फेंकने की बातें करना एक खामख्याली है। वे यह भी कहते हैं कि यदि क्रान्ति हो भी गयी तो जनता सब कुछ गड़बड़ कर देगी और उसकी पीड़ा व्यथा और भी बढ़ जायेगी। लेकिन इतिहास स्वंय इन सफेद झूठों का पर्दाफाश कर देता है। यह एक अकाट्य तथ्य है कि मानव सभ्यता का अबतक का इतिहास क्रान्तियों का इतिहास है। इतिहास के अनुभव हमें यह बताते हैं कि क्रांतियां न केवल सम्भव हैं वरन् वे मुक्तिदायी भी हैं।

7 नवम्बर 1993 को महान अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति की 76वीं वर्षगांठ पड़ती हैं। 1917 में रूस का शोषित–उत्पीड़ित मजदूर सशस्त्र आम बगावत के लिए उठ खड़ा हुआ था और उसने राजधानी पेत्रोग्राद पर कब्जा कर लिया था। यह इतिहास में पहली सफल सर्वहारा क्रान्ति की शुरुआत थी।

क्रान्तिपूर्व पुराना रूसी समाज एक बर्बर पूंजीवादी समाज था, जिसका मुखिया जार था। जनता की विशाल बहुसंख्या गरीब किसानों की थी जो धनी भूस्वामियों के मालिकाने वाली जमीनों पर हाड़–तोड़ मेहनत करते थे। मजदूर तेजी से विकसित हो रहे शहरों में विशाल नये कारखानों में जानलेवा हालात में श्रम करने को बाध्य थे। देश दौलतमंद पूंजीपतियों और बड़े भूस्वामियों के नियंत्रण में था, जो जार और रूसी पोंगापंथी चर्च का समर्थन करते थे। 1917 में रूस प्रथम विश्व युद्ध में शामिल था — एक ऐसे युद्ध में, जिसमें हजारों लोगों की जानें गयीं और जो दुनिया की बड़ी साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच दुनिया के बंटवारे के लिए लड़ा जा रहा था।

गरीबी, कारखानों में बर्बर शोषण, भूख और युद्ध के कत्लेआम ने मजदूरों के अन्दर एक जबर्दस्त क्रान्तिकारी भावना को जन्म दिया। मजदूर क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी, बोल्शेविक पार्टी, जिसके अगुआ व्लादीमिर इलिच लेनिन थे, के नेतृत्व में क्रान्ति में कूद पड़े। वर्षों के गृहयुद्ध के दौरान मजदूरों ने बाकायदा अपनी सशस्त्र सेना का गठन किया और क्रान्ति को कुचलने के लिए संघर्ष कर रहे शोषकों की कमर तोड़ दी।

सत्ता मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी के हाथों में आ जाने के बाद इसने समाज के क्रान्तिकारी रूपान्तरण और जनता को मुक्त करने के लिए अविलम्ब कदम उठाये। नयी क्रान्तिकारी सरकार ने यह आज्ञप्ति जारी की कि अब से सारी जमीन किसानों को दी जाती है। इसके साथ ही इस नये क्रान्तिकारी राज्य ने रूस को प्रथम विश्व युद्ध से अलग कर लिया और शान्ति की घोषणा की।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि 1917 में मजदूर वर्ग द्वारा सत्ता पर कब्जा करने के बाद क्रान्ति को आगे जारी रखने और एक नये समाजवादी समाज की स्थापना करने का मार्ग प्रशस्त हो गया। नयी क्रान्तिकारी सरकार ने जनता के बीच समानता कायम की और सभी राष्ट्रीयताओं के मजदूर वर्ग को समाज के सभी पक्षों के क्रान्तिकारीकरण की प्रक्रिया में भागीदारी करने के लिए स्वतंत्र कर दिया।

1924 में लेनिन की मृत्यु के बाद जोसेफ स्तालिन के नेतृत्व में क्रान्ति जारी रही। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में क्रान्तिकारी जनता ने एक नियोजित समाजवादी उद्योग और सामूहिक स्वामित्व वाली कृषि का ढांचा निर्मित किया। शिक्षा और स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएं पहली बार व्यापक जनता को सुलभ हो सकीं। यह नया समाजवादी राज्य पूरी दुनिया की क्रान्तिकारी जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया। द्वितीय विश्व युद्ध में सोवियत रूस पर नाजियों के हमले के समय यह नया समाजवादी राज्य इतना शक्तिशाली हो चुका था कि उसने हिटलर के नापाक मंसूबों को ध्वस्त कर दिया।

स्तालिन की मृत्यु के बाद कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर के पूंजीवादी तत्वों ने निकिता ख्रुश्चेव के नेतृत्व में तख्तापलट के जरिये सत्ता पर कब्जा कर लिया। उन्होंने 1956 में सर्वहारा के अधिनायकत्व को नष्ट कर दिया और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की। क्रान्तिकारी सोवियत संघ नये जारों के शोषण का साम्राज्य बन गया, वहां पूंजीवाद की पुनर्स्थापना हो गयी और व्यापक जनता की जिन्दगी फिर से पीड़ा–व्यथा के अथाह समुद्र में डूब गयी। दुनिया के पूंजीवादी शासकों के लिए कम्युनिज्म पर हमला करने का बहाना मिल गया और उन्होंने समाजवाद की खोल ओढ़े संशोधनवादियों की पूंजीवादी हुकूमत के अन्तर्गत जनता की पीड़ा–व्यथा की ओर इशारा करते हुए यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि देखो! क्रान्तियां निरर्थक हैं।

अधिकांश पढ़े–लिखे लोग भी 1917 की इस महान अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति के बारे में बहुत कम जानते हैं। और जो जानते भी हैं वे भी दुनिया भर के पूंजीवादी शासकों के कुत्सा–प्रचारों से प्रभावित हैं। इसीलिए, हम अपने पाठकों को इस महान क्रान्ति से परिचित कराने के लिए इस लेख को तीन किश्तों में छाप रहे हैं। आज अतीत की महान क्रान्तियों और अपने शोषण–उत्पीडन से मुक्ति के लिए पूरी दुनिया की जनता के महाकात्यात्मक संघर्षों से परिचित होना और कराना एक सामयिक आवश्यकता बन गयी है। यह लेख इसी आवश्यकता को पूरा करता है।

– सम्पादक

स्वत्वाधिकारी डा. दूधनाथ द्वारा 69, बाबा का पुरवा, निशातगंज, लखनऊ से प्रकाशित एवं उन्हीं के द्वारा वानी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ से मुद्रित। कम्पोजिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ।
सम्पादक : डा. दूधनाथ। सम्पादकीय पता : द्वारा, ओ.पी. सिन्हा, 69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ – 226 007 सम्पादकीय उपकार्यालय : जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, मऊ।